हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 9 नवंबर 2025

11 रजत को मिस्टर फ्रेशर व अर्पिता को मिला मिस फ्रेशर का खिताब

12 संतुलन बिगड़ने से पेड़ से टकराई कार दंपति...

प्राचीन संस्कृति को संजोकर रखने में कलाकारों का अहम योगदान: विधायक

दादा लखमीचंद रचित सांग पदमावत पर खूब बजी तालियां

विधायक राजेश जून ने लोकसंस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कलाकारों को किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सूर्य कवि पंडित लख्मीचंद धर्मशाला समिति की ओर से करवाए जा रहे हरियाणवीं सांग के चौथे दिन शनिवार को प्रसिद्ध सांगी पंडित विष्णुदत्त ने पदमावत सांग का प्रदर्शन किया। मुख्य अतिथि के रूप में विधायक राजेश जून ने लोकसंस्कृति को बढ़ावा दिया। नगर परिषद चेयरपर्सन सरोज रमेश राठी अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रही। विधायक राजेश जून ने कहा कि प्राचीन संस्कृति को संजोकर रखने में कलाकारों का अहम योगदान है। दादा लख्मीचंद की कही हुई बातें आज सत्य साबित हो रही हैं। चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि पंडित विष्णुदत सांग परम्परा के माध्यम से हरियाणवीं संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। नंबरदार एसोसिएशन के प्रधान सतीश राठी, पार्षद राजेश तंवर, कर्मबीर शर्मा, राजेश मकड़ोली, छोटूराम धर्मशाला के प्रधान सतीश राठी, गौरव राठी, प्रधान राजबीर रोहिल्ला आदि उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़। विधायक राजेश जून को सम्मानित करते धर्मशाला के पदाधिकारी। फोटो : हरिभूमि

सभी अतिथियों को किया सम्मानित

सभी अतिथियों का धर्मशाला समिति की तरफ से सम्मानित किया गया। सांग के आयोजन में राजपाल शर्मा, प्रधान प्रवीण शर्मा, महासचिव सतीश शर्मा, हरिओम, बलराम, रमेश शर्मा, मंजीत पाराशर, मामन राम, हरिओम मुदगिल, सुमित, अमित अत्री, अतर सिंह, रमेश कौशिक, मनोज भारद्वाज व दीपक राज ने सहयोग किया।

वन में बिछड़ जाते दोस्त

सांगी पंडित विष्णु दत्त ने बताया कि रणबीर राजा का लड़का अपने दोस्त के साथ शिकार खेलने वन में जाता है और दोनों दोस्त एक दूसरे से बिछड़ जाते हैं। राजकुमारी पदमावत अपनी सखियों के साथ वहां पर घूमने आई थी। रणबीर उन्हें देख हैरान रह जाता है कि इतने बड़े वन में महिलाओं का क्या काम। रणबीर और राजकुमारी पदमावत की आंखें मिलती हैं और एक दूसरे पर मोहित हो जाते हैं।

शिवानी प्रथम, राधिका द्वितीय व दीपिका रही तृतीय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

वैश्य आर्य शिक्षण महिला महाविद्यालय की छात्रा शिवानी ने जोनल यूथ फेस्टिवल में हरियाणवी कविता पठन में प्रथम, राधिका ने पोस्टर मेकिंग में द्वितीय तथा दीपिका ने हिंदी कविता वाचन में तृतीय स्थान प्राप्त कर कॉलेज का नाम रोशन किया है।

बता दें कि तीन दिवसीय युवा महोत्सव पलवल के सरस्वती महिला महाविद्यालय में हुआ था। द्वितीय वर्ष की पूजा व प्रथम वर्ष की साहिना ने हिन्दी वाद-विवाद, ईशा ने अंग्रेजी कविता, साहिना ने उर्दू कविता, राधिका ने रंगोली प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। विजयी छात्राएं शिवानी, राधिका व दीपिका अब अंतर जोनल युवा महोत्सव में हिस्सा लेंगी। उन्होंने इस सफलता का श्रेय प्राचार्या डॉ आशा शर्मा की अभिप्रेरणा व प्रोत्साहन तथा संयोजक सुनीता रानी व सारिका के मार्गदर्शन को दिया। कॉलेज प्रधान सत्यनारायण अग्रवाल, प्राचार्या डॉ आशा शर्मा व स्टाफ सदस्यों ने छात्राओं को बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य का आशीर्वाद दिया।

बहादुरग। विजेता व प्रतिभागी छात्राओं के साथ प्रिंसिपल व अन्य। फोटो : हरिभूमि

कर्मचारियों को नशे के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

■ नशा व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ परिवार व समाज दोनों के लिए हानिकारक

नशा मुक्ति टीम बहादुरगढ़ की ओर से एचएनजी कंपनी में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों को नशे से दूर रहकर स्वस्थ जीवन जीने, यातायात नियमों का पालन करने और साइबर अपराधों से बचने के लिए जागरूक करना था।

कार्यक्रम के दौरान टीम के अधिकारियों ने बताया कि नशा व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ परिवार व समाज दोनों के लिए हानिकारक होता है। निरीक्षक सतीश कुमार ने कर्मचारियों को यातायात नियमों का पालन करने, हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग अनिवार्य रूप से करने तथा नशे की अवस्था में वाहन न चलाने की हिदायत दी। साथ ही, साइबर अपराधों से बचाव के लिए टीम ने आवश्यक जानकारी दी।

अधिकारियों ने कर्मचारियों को अज्ञात लिंक पर क्लिक न करने, पासवर्ड सुरक्षित रखने, और सोशल मीडिया पर निजी जानकारी साझा करने को प्रेरित किया। अंत में सभी कर्मचारियों को नशामुक्त जीवन अपनाने और सुरक्षित समाज निर्माण का संकल्प दिलाया गया।

बहादुरगढ़। प्रिंसिपल व अन्य प्रोफेसर्स के साथ मेडलिस्ट यश। फोटो : हरिभूमि

यश ने स्टेट ओलंपिक में जीता गोल्ड

बहादुरगढ़। राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ के प्रथम वर्ष का छात्र यश हरियाणा स्टेट ओलंपिक में छाया रहा। शानदार प्रदर्शन करते हुए बॉक्सिंग की 85 किलोग्राम भार वर्ग स्पर्धा में यश ने स्वर्ण पदक हासिल किया। यह प्रतियोगिता राष्ट्रीय बॉक्सिंग अकादमी रोहतक में पांच से सात नवंबर तक हुई थी। यश बहादुरगढ़ के जगरतपुर गांव का रहने वाला है और खेलों में लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है। इससे पहले भी यश ने एक से सात अक्टूबर तक चेन्नई में आयोजित बीएफई कप 2025 में तीसरा स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया था। यश की इस उपलब्धि पर शनिवार को राजकीय महाविद्यालय में उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य दलबीर सिंह और उप प्राचार्या सुमन हुड्डा ने यश को सम्मानित किया। उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में शारीरिक शिक्षा विभाग के इंचार्ज डॉ. अमित छिकारा, राजीव आसीवाल तथा डॉ. राजीव दहिया सहित कॉलेज के अन्य शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

दौड़ में दीपांशु व अंतरा ने मारी बाजी

■ हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में हुई 9वीं वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव छारा स्थित चौधरी हरद्वारी लाल राजकीय महाविद्यालय में 9वीं वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता शनिवार को आरंभ हो गई। कार्यकारी प्राचार्य डॉ. अनीता दलाल के दिशा निर्देशन में आयोजित इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

प्रतियोगिता के दौरान 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद, शॉटपुट, भाला फेंक, मटकी दौड़, थ्री लेग रेस, सैक रेस सहित अन्य स्पर्धाएं हुई। नेहरू कॉलेज झज्जर के प्राचार्य डॉ. दलबीर हुड्डा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यकारी प्राचार्य डॉ. अनीता दलाल व समस्त स्टाफ ने उनका स्वागत और अभिनंदन किया। लड़कों की 200 मीटर दौड़ में दीपांशु ने पहला, हर्ष ने दूसरा और नितेश ने तीसरा स्थान हासिल किया। लड़कियों में अंतरा ने पहला, साक्षी ने दूसरा और प्रियंका ने तीसरा स्थान पाया। लंबी कूद में साहिल, दीपांशु व अंकुश ने बाजी मारी।

बहादुरगढ़। प्रतियोगिता के दौरान ऊंची कूद लगाती एक छात्रा। फोटो : हरिभूमि

शॉटपुट में सोनू अव्वल

वहीं लड़कियों की लंबी कूद में अंतरा, विद्या व तन्नु टॉप थ्री में रहीं। ऊंची कूद में अंतरा, विद्या व खुशी विजयी हुईं। शॉटपुट में सोनू ने पहला, नितेश ने दूसरा और रौनक ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। लड़कियों में खुशी अंतरा व संजू क्रमशः पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर रही। मुख्य अतिथि डॉ. दलबीर हुड्डा ने विद्यार्थियों को खेल भावना से खेलने को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि खेल जीवन में शारीरिक, मानसिक व सामाजिक संतुलन बनाए रखने का सर्वोत्तम माध्यम हैं। कार्यक्रम के अंत में स्पोर्ट्स इंचार्ज देवेंद्र ने सभी का धन्यवाद किया और विद्यार्थियों को भविष्य में भी ऐसे आयोजनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

बहादुरगढ़। जलनिकासी व्यवस्था के बारे में जानकारी देते ग्रामीण। फोटो : हरिभूमि

अन्नपूर्णा मुहिम के तहत हो रही जलनिकासी

बहादुरगढ़। गांव डाबोदा कलां में की गई जलनिकासी के लिए ग्रामीणों ने संत रामपाल जी महाराज द्वारा किए गए सहयोग का आभार जताया। ग्रामीणों ने बताया कि बाढ़ के पानी की निकासी के लिए 6 हजार फुट 8 इंची पाइप, 10 हॉर्स पॉवर की 3 बिजली की मोटर व कंपलीट सेट संत रामपाल द्वारा दिया गया था। गांव की पंचायत व ग्रामीणों की प्रार्थना पर संत रामपाल जी महाराज के आदेश से अन्नपूर्णा मुहिम के तहत 20 अक्टूबर को संत रामपाल के अनुयाइयों द्वारा डाबोदा कलां गांव में जलनिकासी व्यवस्था मुहैया कराई गई थी। सर्व ग्राम पंचायत द्वारा संत रामपाल व उनके अनुयाइयों का भव्य स्वागत किया गया था। गांव में निजी कार्यक्रम में पहुंचे पूर्व विधायक राजेंद्र जून द्वारा बाढ़ का पानी निकालने के लिए बिजली की मोटर का बटन दबाकर इस का काम का शुभारंभ किया था। लेकिन यह पूरा सेटअप पूर्व विधायक के निजी कोष से नहीं उपलब्ध करवाया गया। ग्रामीणों के अनुसार वास्तव में बाढ़ के पानी की निकासी के लिए पाइप, मोटर व पूरा सेटअप संत रामपाल महाराज द्वारा गांव डाबोदा कलां को स्थाई तौर पर दी गई है।

वाटरपोलो में करनाल ने जीते दोनों गोल्ड मेडल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

27वें हरियाणा राज्य खेलों की वाटरपोलो स्पर्धा में करनाल की टीम ने गोल्ड मेडल जीते। करनाल के लड़कों ने सोनीपत को 5-2 के अंतर से हराया। करनाल की लड़कियों ने जींद की लड़कियों को 6-1 के अंतर से हराकर गोल्ड मेडल जीता। लड़कों में सोनीपत को सिल्वर मेडल और जींद को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। लड़कियों में दूसरा स्थान जींद को मिला।

तीसरे स्थान पर शाह सतनाम एजूकेशनल एंड वैलफेयर सोसायटी की टीम रही। हरियाणा ओलम्पिक एसोसिएशन के उपाध्यक्ष अनिल खत्री ने विजेता टीमों को मेडल देकर सम्मानित किया। सांसद धर्मबीर के पुत्र मोहित ने भी वाटरपोलो मैच के दौरान खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया। एसीपी प्रदीप खत्री ने भी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर महेंद्र पहलवान, सुरेश जून, सुनील खत्री, बलवान कादयान, हनुमान खत्री, दिनेश खत्री, तैराकी कोच साई जाधव, पदमपाल, गूगन कोच, राम ढुल, अनिल शर्मा, धनराज, मुकेश, प्रेम, विनोद, विकास आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। वाटरपोलो टीम के साथ भाजपा नेता मोहित, एसीपी प्रदीप खत्री व अनिल खत्री। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ. विनोद मलिक।

कॉलेज में करियर मार्गदर्शन विषय पर प्रेरक सत्र

बहादुरगढ़। राजकीय महाविद्यालय बहादुरगढ़ में प्राचार्य दलबीर सिंह के दिशा-निर्देशन में प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में कैरियर मार्गदर्शन विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। इस प्रेरक व ज्ञानवर्धक व्याख्यान के प्रति विद्यार्थियों ने खूब रूचि दिखाई। मुख्य वक्ता के रूप में खरखोदा स्थित शहीद दलवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक (डिफेंस स्टडीज) डॉ. विनोद मलिक ने शिरकत की। उन्होंने विद्यार्थियों को विभिन्न करियर विकल्पों, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी, आत्मविश्वास व व्यक्तित्व विकास के महत्व पर विस्तारपूर्वक मार्गदर्शन दिया। कार्यक्रम का संचालन रोजगार प्रकोष्ठ की संयोजक रीना कुमारी ने किया। उन्होंने विद्यार्थियों को इस व्याख्यान के उद्देश्य व इसकी व्यावहारिक उपयोगिता के बारे में अवगत कराया। व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता दिखाई और डॉ. मलिक से करियर से जुड़े विविध प्रश्न पूछे, जिनके उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से उत्तर दिए। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्राचार्य दलबीर सिंह ने वक्ता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और भविष्य की दिशा तय करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

व्याख्यान में एआई के बारे में दी जानकारी

बहादुरगढ़। रिसोर्स पर्सनों का स्वागत करती कॉलेज प्राचार्या व अन्य। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में बीसीए विभाग द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंट फॉर करियर ग्रोथ विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। थर्टी डेज टेक्नोलॉजी लिमिटेड के को-फाउंडर रोहित आर्य तथा मुकुल सागर ने एआई के बारे में छात्राओं को विस्तार से समझाया। प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने कहा कि आज का समय एआई का युग है और इस विषय का गहन अध्ययन करना बहुत आवश्यक है। छात्राएं एआई से संबंधित सभी समस्याओं का समाधान पा सकेंगी और इससे प्रेरित होकर कई नए प्रोग्राम और प्रोजेक्ट डेवलप कर सकेंगी। एआई का उपयोग करना सभी के लिए लाभदायक है और नई उपलब्धियां प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है। थर्टी डेज प्राइवेट लिमिटेड के को-फाउंडर्स रोहित आर्य ने छात्राओं को एआई के महत्व व उससे संबंधित सभी विषयों के बारे में बताया।

इसके फायदे और नुकसान को भी छात्राओं के साथ साझा किया। कार्यक्रम में बीसीए की 68 तथा बीकॉम की 30 छात्राओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में प्राध्यापिका शिखा तिवारी, वर्षा, रेखा व नैना ने सहयोग दिया।

36 लाख में 3 हजार आवारा कुत्तों का होगा बधियाकरण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों के तहत नगर परिषद ने 3 हजार कुत्तों का बधियाकरण (नसबंदी) कराने का निर्णय लिया है। इसके लिए संबंधित एजेंसी को वर्क ऑर्डर जारी कर दिया गया है। इस काम पर नगर परिषद की ओर से करीब 36 लाख रुपए की राशि खर्च की जाएगी। चेयरपर्सन सरोज राठी ने बताया कि शहर में आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या से लोगों को परेशानी हो रही थी और कुत्तों के काटने की शिकायतें लगातार सामने आ रही थीं। परिषद का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि यह पूरी प्रक्रिया मानवीय और वैज्ञानिक तरीके से पूरी की जाए। इस दौरान न तो पशुओं को कष्ट हो और न ही शहरवासियों को असुविधा। प्रत्येक कुत्ते का बधियाकरण 1189 रुपए की दर से किया जाएगा। उन्होंने बताया कि टेंडर प्रक्रिया पूरी करके जींद की नैन एजेंसी को यह जिम्मेदारी सौंपी गई। टेंडर शर्तों के मुताबिक एजेंसी को वेटनरी डॉक्टर, दवाइयों की उपलब्धता, कुत्तों को पकड़ने और रखने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

कान पर लगाया जाएगाटी मार्क टैग

सरोज राठी ने बताया कि नसबंदी और टीकाकरण के बाद कुत्तों को उसी स्थान पर छोड़ा जाएगा, जहां से उन्हें पकड़ा गया था। उनकी पहचान के लिए कान पर टी मार्क टैग लगाया जाएगा। एजेंसी को यह सुनिश्चित करना होगा कि छह माह से कम उम्र के कुत्तों और छोटे पिल्लों वाली मादा कुत्तों की नसबंदी न की जाए। बीमार या घायल कुत्तों की देखभाल के लिए अलग व्यवस्था अनिवार्य होगी। नसबंदी के बाद प्रत्येक कुत्ते को कम से कम चार दिन के लिए निगरानी (होम स्टे) में रखा जाएगा। चेयरपर्सन सरोज राठी ने बताया कि कार्य शुरू करने से पहले एजेंसी को भारतीय पशु कल्याण बोर्ड से अनुमति प्राप्त करनी होगी। इसके साथ ही नगर परिषद के कार्यकारी अधिकारी की ओर से एक ऑर्गन काउंटिंग व मॉनिटरिंग कमेटी बनाई जाएगी, जिसमें पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के अधिकारी और दो वेटनरी डॉक्टर भी शामिल होंगे। यह कमेटी पूरे अभियान की निगरानी करेगी। पूरा कार्य सीसीटीवी कैमरों की निगरानी में किया जाएगा ताकि पारदर्शिता बनी रहे और किसी प्रकार की अनियमितता न हो।

ओमेक्स सिटी में हुआ कार्यक्रम, मुख्य अतिथि के रूप में एसीपी पहुंचे

सनातन संस्कृति के प्रसार से जुड़ी पुस्तकों का हुआ लोकार्पण

सनातन संस्कृति के उत्थान में बढ़-चढ़कर सहयोग करने का आह्वान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

टैक्समैन प्रकाशन द्वारा शनिवार को श्रीनिवासन आनंद लिखित दो शोधपूर्ण ग्रंथों का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। ओमेक्स सिटी में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एसीपी दिनेश कुमार मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में कम्युनिटी पुलिसिंग प्रभारी सतीश कुमार सहित क्षेत्र के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

एसीपी दिनेश कुमार बॉक्सर ने दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रकाशन संस्थान के महाप्रबंधक जितेंद्र चौधरी ने बताया कि विश्व की तेजी से बदलती सोच और कैरियर संबंधी आवश्यकताओं व प्राथमिकता के चलते अपनी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत से अनभिज्ञ भारत की युवा पीढ़ी को सनातन संस्कृति से जोड़ने के उद्देश्य से अब तक कानून, वित्त व न्याय संबंधी हजारों पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं।

उन्होंने सभी आगंतुकों का सनातन संस्कृति के प्रसार संबंधी इस अभियान से जुड़ने के लिए उनका आभार जताया। डीजीएम चंद्र शेखर ने दशकों से प्रकाशन के क्षेत्र में सक्रिय टैक्समैन कंपनी का विस्तृत परिचय दिया। इस अवसर पर छतरपुर से पधारे संत नागपाल शोध संस्थान के प्रिंसिपल डॉ. मृत्युंजय त्रिपाठी ने सनातन संस्कृति के उत्थान में बढ़-चढ़कर सहयोग करने का आह्वान किया। प्रबंधन से जुड़े जितेन्द्र कुमार, कीर्ति नारायण मलिक व चंद्रशेखर आदि ने कंपनी के निदेशक अंश भार्गव का स्वागत किया। इंस्पेक्टर सतीश कुमार ने अपनी महान सांस्कृतिक विरासत को संजोने की महती आवश्यकता पर बल दिया।

बहादुरगढ़। सनातन संस्कृति से जुड़ी पुस्तकों का विमोचन करते अधिकारी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

इस मौके पर कलमवीर विचार मंच के संस्थापक कवि कृष्ण गोपाल विद्यार्थी, विकास यशकीर्ति, डॉ सीमा वत्स, विरेंद्र कौशिक, सुनीता श्री, जगबीर कौशिक, मनोज कमल दहिया, अर्चना झा, अनिल भारतीय, मुकेश व्यास आदि रचनाकारों ने अपने रोचक व भावपूर्ण काव्य पाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

खबर संक्षेप

रामपाल ने सामान्य एथलेटिक्स में जीता गोल्ड

झज्जर। क्षेत्र के गांव माछरौली निवासी पैरा एथलीट रामपाल ने एशियाई स्तर की 23वीं मास्टर्स एथलेटिक्स चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल हासिल कर प्रदेश का नाम रोशन किया है। खास बात यह रही कि यह प्रतियोगिता सामान्य एथलीट्स के बीच हुई थी और रामपाल ऐसे पहले पैरा खिलाड़ी बने जिन्होंने सामान्य खिलाड़ियों को पछाड़ते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। रामपाल ने बताया कि महज तीन साल की उम्र में एक दुर्घटना में उसने अपना दायां हाथ खो दिया था। लेकिन उन्होंने इसे कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। खेलों के प्रति जुनून ने उसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। वह भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए रियो, टोक्यो और पेरिस पैरा ओलंपिक खेलों में भाग लेते हुए दो बार रजत पदक भी जीत चुका है। वर्तमान में हरियाणा खेल विभाग के उपनिदेशक के पद पर कार्यरत रामपाल ने कहा उसका लक्ष्य आने वाली पीढ़ी के पैरा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का रास्ता का है।

खिलाड़ी रामपाल

एसआईएएसटीई में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन

रजत को मिस्टर फ्रेशर व अर्पिता को मिला मिस फ्रेशर का खिताब

सोलो डांस, ग्रुप डांस, सोलो सांग, ग्रुप सांग आदि गतिविधियां शामिल रहीं

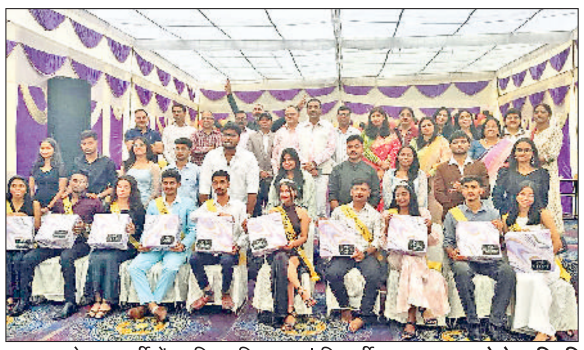
झज्जर। फ्रेशर पार्टी में उपस्थित शिक्षक एवं विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

एसआईएएसटीई में शनिवार को प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया गया। पार्टी में विद्यार्थियों द्वारा कई आनंददायक गतिविधियों और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, सोलो डांस, ग्रुप डांस, सोलो सांग, ग्रुप सांग आदि गतिविधियां शामिल रहीं। पार्टी के दौरान छात्र रजत को मिस्टर फ्रेशर तथा छात्रा अर्पिता को मिस फ्रेशर का खिताब दिया गया। प्राचार्या संतोष द्वारा साहिल को मिस्टर परफेक्ट, जय लक्ष्मी को मिस परफेक्ट, गौरव को मिस्टर पर्सनेलिटी व मोहनी को मिस पर्सनेलिटी तथा कृत को मिस्टर क्यूट व खुशी को मिस क्यूट के खिताब से नवाजा गया।

झज्जर। प्रतापगढ़ में उपस्थित शिक्षक एवं विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

विद्यार्थियों ने किया शैक्षिक भ्रमण, प्रतापगढ़ की सैर की

झज्जर। कैंब्रिज इंटरनेशनल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भदाना के विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम के अंतर्गत प्रतापगढ़ की सैर कराई गई। भ्रमण का उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान से परे व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना और उन्हें भारतीय संस्कृति व ग्रामीण जीवन से जोड़ना रहा। विद्यालय निदेशक धर्मेंद्र जून ने बताया कि यात्रा में करीब 400 विद्यार्थियों ने भाग लेते हुए पारंपरिक हरियाणवीं लोक संस्कृति, लोक नृत्य, संगीत और स्वादिष्ट ग्रामीण व्यंजनों का आनंद लिया। इसके अलावा ऊंट और बैलगाड़ी की सवारी, पारंपरिक खेलों तथा हस्तशिल्प प्रदर्शनी जैसे आकर्षक कार्यक्रमों में भी रूचि दिखाई। उन्होंने कहा कि ऐसी यात्राएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, टीमवर्क और संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना को बढ़ावा देती हैं।

रिले साइक्लिंग में गोल्ड मेडल लेने वाली खिलाड़ी सम्मानित

झज्जर। खिलाड़ी मिनाक्षी व कोच शर्मिला को सम्मानित करते हुए ग्राम एवं संस्था प्रतिनिधि। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

■ एक सप्ताह में गांव की बेटियों द्वारा जीता गया यह दूसरा मेडल

कुरुक्षेत्र में आयोजित राज्य स्तरीय रिले साइक्लिंग रेस में क्षेत्र के गांव पलड़ा निवासी मिनाक्षी ने गोल्ड मेडल हासिल कर जिले का नाम रोशन किया है। पंच ओमप्रकाश शर्मा ने बताया कि इस उपलब्धि पर मिनाक्षी व कोच शर्मिला डबास को ग्राम पंचायत व मेरा गांव मेरा परिवार संस्था द्वारा फूल मालाओं और पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि पहले बेटियों को केवल चूल्हे-चौके तक ही सीमित रखा जाता था, लेकिन आज बेटियों के दम और जज्बे को पूरी दुनिया सलाम करती है। उन्होंने बताया कि एक सप्ताह में गांव की बेटियों द्वारा जीता गया यह दूसरा मेडल है।

जिला कारागार में बंदियों ने वॉलीबॉल मैच खेलकर दिया नशा मुक्ति का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

■ खेल गतिविधियां बंदियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण

जिला कारागार में शनिवार सुबह बंदियों द्वारा वॉलीबॉल मैच का आयोजन किया गया। जिसमें खिलाड़ियों ने खेल के माध्यम से नशा मुक्ति का सशक्त संदेश दिया। जेल अधीक्षक सेवा सिंह ने बताया कि खेल गतिविधियां बंदियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वॉलीबॉल जैसे टीम-गेम न केवल अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं, बल्कि नशे जैसी बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा भी देते हैं। उन्होंने कहा कि जेल प्रशासन समय-समय पर ऐसी रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करता रहता है, ताकि बंदियों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो और कारावास अवधि के दौरान उनका समग्र व्यक्तित्व विकास हो सके। मैच में टीमों ने उम्दा प्रदर्शन किया।

झज्जर। जिला कारागार परिसर में मैच खेलते हुए बंदी। फोटो : हरिभूमि

सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर

जिले में 10 व 11 नवंबर को निकलेगीं पद यात्राएं

झज्जर। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औमप्रकाश धनखड़। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

सरदार पटेल की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में उनका संदेश देश भर में सड़क यात्राएं और पद यात्राएं निकाली जा रही हैं। ये पद यात्राएं एकता, अखंडता और एकात्मकता का उत्सव होंगी। छह प्रदेशों की पद यात्राओं के प्रभारी एवं भाजपा के राष्ट्रीय सचिव औमप्रकाश धनखड़ ने सिंचाई विभाग के विश्राम गृह में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि झज्जर जिले में पहली पदयात्रा दस नवंबर को महर्षि दयानंद स्टेडियम झज्जर से शुरू होकर गुढ़ा होते हुए बेरी हलके के गांव धौड़ में समापन होगी। दूसरी पद यात्रा 11 नवंबर को सुबह आठ बजे बादली हलके के गांव बुपनिया से शुरू होकर डाबौदा होते हुए बहादुरगढ़ हलके के गांव मांडौठी तक होगी। इस दौरान जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, जिप चेयरमैन कप्तान बिरधाना, पद यात्रा के जिला संयोजक संजय कबलाना, दिनेश, आनंद सागर, मनीष, नरेंद्र, सुभाष देशवाल, प्रकाश सहित भी मौजूद रहे।

झज्जर। मुख्यातिथियों के साथ उपस्थित विजेता टीम के खिलाड़ी। फोटो : हरिभूमि

राज्य स्तरीय खो-खो में राजकीय प्राथमिक पाठशाला भदानी के विद्यार्थी रहे तृतीय

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

■ विजेता खिलाड़ियों को पदक एंव ट्रॉफी देकर सम्मानित किया

राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में राजकीय प्राथमिक पाठशाला भदानी के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए पदक हासिल किए हैं। रोहतक के सुनारिया में हुई इस प्रतियोगिता के अंडर 11 आयु वर्ग में नन्हें खिलाड़ियों की टीम अपने उत्कृष्ट खेल कौशल, टीम भावना और मेहनत के बल पर तीसरा पदक जीत कर स्कूल का गौरव बढ़ाया है। विजेता खिलाड़ियों को मुख्यातिथियों द्वारा पदक एंव ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इस सफलता पर स्कूल के प्राचार्य डॉक्टर भूप सिंह व प्राथमिक विद्यालय प्रभारी एवं टीम इंचार्ज सत्यपाल ने टीम के कोच प्रवीण व जोगेंद्र के प्रयासों की सराहना की।

शिक्षकों को दी चाइल्ड डेवलेपमेंट व मेंटल हेल्थ संबंधी जानकारी

झज्जर। वर्कशॉप में उपस्थित रिसोर्स पर्सन मीना कौशिक एवं शिक्षक।

झज्जर। एलए सीनियर सैकेंडरी स्कूल में सीबीएसई के बिल्डिंग कैपेसिटी प्रोग्राम के अंतर्गत चाइल्ड डेवलेपमेंट व मेंटल हेल्थ विषय पर एक दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप में स्कूल के सभी टिचिंग स्टॉफ ने भाग लिया। इसका उद्धेश्य अध्यापकों को चाइल्ड डेवलेपमेंट व मेंटल हेल्थ को अपनी क्लास में बच्चों के साथ इम्प्लीमेंट करना रहा। सीबीएसई रिसोर्स पर्सन मीना कौशिक ने शिक्षकों से कहा कि उन्हें चाइल्ड डेवलेपमेंट व मेंटल हेल्थ को समझ कर प्रत्येक बच्चे का सही विकास करना चाहिए। उन्होंने शिक्षकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के जवाब भी दिए। इस मौके पर स्कूल संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनीता गुलिया, नीलम दहिया व प्रबंधक केएम डागर ने रिसोर्स पर्सन का आभार जताया।

आनंद पथ कार्यक्रम आज, तैयारियां पूरी

झज्जर। रविवार सुबह छह बजे शहर के अंबेडकर चौक पर जिला पुलिस द्वारा आनंद पथ कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। पुलिस कमिश्नर डॉक्टर राजश्री सिंह ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एक सांस्कृतिक एवं सामाजिक एकता को बढ़ावा देना है। इस दौरान खेल जगत से लेकर हांस्य जगत तक के सेलिब्रिटी मौजूद रहेंगे। जिसमें पदमश्री विजेंद्र सिंह ओलंपिक मेडलिस्ट, अमन सहरावत अर्जुन अवार्डी, राज सिंधिया डायरेक्टर लेखक एंव प्रोड्यूसर, परितोष त्रिपाठी हांस्य कलाकार, विक्की काजला सिंगर एवं अभिनेता, आरोही गुर्जर आर्टिस्ट एवं अभिनेता, दीपक और रामवीर आर्यन हरियाणवी अभिनेता की मुख्य मौजूदगी युवाओं में एक नया जोश लेकर आएगी। इस कार्यक्रम का उद्धेश्य जनता के लिए जनता को समर्पित थीम पर आधारित रहेगा, जिसमें युवाओं को खेल के फायदे और अपने जीवन को तनाव मुक्त बनाने के बारे में बताया जाएगा। कार्यक्रम में पुलिस कर्मचारियों के साथ-साथ आम नागरिक, स्कूली बच्चे, सामाजिक संस्थाएं, खिलाड़ी एवं वरिष्ठ नागरिक भी बढ़-चढ़कर भाग लेंगे।

एडीसी ने धुंध के मौसम में सड़क सुरक्षा बढ़ाने के दिए निर्देश

झज्जर। बैठक के दौरान आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए एडीसी जगनिवास। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। सड़क सुरक्षा को प्रभावी बनाने के उद्धेश्य से लघु सचिवालय स्थित सभागार में एडीसी जगनिवास की अध्यक्षता में संबंधित विभागों की बैठक हुई। एडीसी ने कहा कि सर्दी के मौसम में धुंध के चलते सड़क दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है, इसलिए सभी विभाग समन्वय के साथ आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि सड़कों पर रिफ्लेक्टर, चेतावनी लाइट, सफेद लाइन मार्किंग एवं अन्य सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए जाएं। उन्होंने कहा कि सड़क किनारे अवैध रूप से खड़े वाहनों को हटवाया जाए तथा सरकारी व निजी बसें केवल निर्धारित स्थानों पर ही रोकी जाएं। उन्होंने सड़कों से गड्ढों को भरवाने, अवैध कटों को बंद करवाने तथा ब्लाइंड मोड पर झाड़ियों की सफाई करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही सड़कों पर बाहर निकली पेड़ों की शाखाओं की ट्रिमिंग भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

रसायन विज्ञान सहायक प्राध्यापक बनी साक्षी

झज्जर। होनहार बेटी साक्षी बेनीवाल का चयन रसायन विज्ञान के सहायक प्राध्यापक के रूप में हुआ है। साक्षी ने बताया कि उनके दादा मास्टर हरकेराम केंद्रीय विद्यालय में अंग्रेजी विषय के अध्यापक तथा पिता सुरेंद्र बेनीवाल लिपिक के रूप में कार्यरत थे। उनकी बुआ सुनीता बेनीवाल नेहरू कॉलेज के भूगोल विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। साक्षी ने बताया कि करीब 25 वर्ष पहले सड़क हादसे में पिता की मौत के बाद उनकी मां राजवंती पर ही परिवार की जिम्मेदारी आन पड़ी। साक्षी ने बताया कि उसने लगातार दो बार नेट क्वालीफाई किया तीसरी बार नेट जेआरएफ क्वालीफाई होने के बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी में उनका पीएचडी में रजिस्ट्रेशन हुआ। मूल रूप से सफीपुर गांव निवासी साक्षी पिछले लंबे अरसे से आर्य नगर में रह रही है।

होनहार बेटी साक्षी

पुराना बस स्टैंड रोड पर मां भगवती जागरण कल

झज्जर। पुराना बस स्टैंड मार्ग पर नव निर्माण युवा जाटव सेवा समिति द्वारा सोमवार को मां भगवती के बारहवें विशाल जागरण का आयोजन किया जाएगा। आयोजक समिति प्रवक्ता हितेश निगम ने बताया कि जागरण में भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ जहां ज्योति प्रचंड करेंगे वहीं मुख्यातिथि के रूप में भाजपा नेता मनीष बंसल तथा अति विशिष्ट अतिथि के रूप में नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी व जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान बिरधाना को आमंत्रित किया गया है। भजन गायक आकाश शर्मा, प्रीती चौहान व कुलदीप सिंह द्वारा भजनों के माध्यम से मां भगवती की महिमा का गुणगान किया जाएगा।

सूचना

हम, रोशनी पत्नी श्री सुरेश चन्द्र व सुरेश चन्द्र पुत्र श्री बस्ती राम निवासी म.नं. 980/13, गली नं. 2 फ्रैन्डस कॉलोनी, नजफगढ़ रोड, बहादुरगढ़ तह. बहादुरगढ़ जिला झज्जर हरियाणा बयान करते हैं कि हमारा लड़का रवि गुलिया व पुत्रवधु गिंकी पत्नी श्री रवि गुलिया हमारे व हमारे परिवार के कहने सुनने से बाहर है इसलिए हम इनको अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल करते हैं भविष्य में इनके साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार रखने वाला, लेनदेन करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। इसमें हमारी व हमारे परिवार के किसी भी सदस्य की कोई भी जिम्मेवारी नहीं होगी।

सूचना

हम मनोज देवी पत्नी जयबीर सिंह पुत्र श्री रामबीर निवासी जोंधि तहसील जिला झज्जर, बयान करते हैं कि करीना हमारी सगी लड़की है। जो कि अब हमारे कहने सुनने से बाहर है इसलिए हम उसे अपनी चल अचल संपत्ति से बेदखल करते हैं भविष्य में उसके साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार रखने वाला, लेनदेन करने वाला, कानूनी गैरकानूनी काम करने वाला स्वयं जिम्मेवार होगा। इसमें हमारी और हमारे परिवार के किसी भी सदस्य की कोई भी जिम्मेवारी नहीं होगी।

महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत प्रतियोगिता का आयोजन

स्लोगन में वंदना व पोस्टर मेकिंग में मुस्कान रही प्रथम

हरिभूमि न्यूज ▸▸| झज्जर

■ प्रतियोगिता का मूल्यांकन डॉक्टर सोनिया गोयल एवं डॉक्टर अनुपमा यादव ने किया

महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में शनिवार को नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत पोस्टर मेकिंग और स्लोगन राइटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मनोविज्ञान विभाग एवं ड्रग डी-एडिक्शन सेल द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राचार्या डॉक्टर चित्रलेखा बंसल ने किया। उन्होंने छात्राओं को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरुक करते हुए किसी भी प्रकार के नशे दूर रहने व अन्य लोगों को भी जागरुक करने के लिए प्रेरित किया।

प्रतियोगिता में भाग लेते हुए छात्राओं ने अपने सृजनात्मक प्रयासों के माध्यम से नशा मुक्त समाज का संदेश सांझा किया। प्रतियोगिता का मूल्यांकन डॉक्टर सोनिया गोयल एवं डॉक्टर अनुपमा यादव ने किया। कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर नीतू जैन ने बताया कि पोस्टर मेकिंग में मुस्कान ने पहला, याशिका ने दूसरा व टीना ने तीसरा स्थान हासिल किया। स्लोगन राइटिंग में वंदना प्रथम, पायल द्वितीय तथा रोशनी तृतीय रही। विजेता छात्राओं को महाविद्यालय प्रबंधन समिति के जनरल सेक्रेटरी गौरव गोयल द्वारा पुरस्कृत किया गया।

झज्जर। विजेता छात्राओं के साथ उपस्थित शिक्षक एवं जनरल सेक्रेटरी गौरव गोयल। फोटो : हरिभूमि

SAT KABIR INSTITUTE OF TECHNOLOGY AND MANAGEMENT
VPO-Ladrawan, Bahadurgarh, Distt- Jhajjar (HR)
Approved by AICTE and Affiliated to MDU, Rohtak
Walk in Interview on 10.11.2025 at 9:00 am
For the Following Posts and Courses:-
Prof. in - ME, CE, CSE, ECE, EE, Mgmt & MCA Departments
Asso. Prof. in :- ME, CE, CSE, ECE, EE, Mgmt & Computer Application
Salary and Qualification as per MDU/AICTE norms. Come with Original Documents, Passport Size Photo, PAN No., Aadhar Card. Submit resume on email i.e. satkabircollege@gmail.com or by hand for more information Contact at -09991187052.
Sd/- (Dr. H.K. Chhillar), Chairman

खबर संक्षेप

अवैध हथियार सहित आरोपी गिरफ्तार

बहादुरगढ़। पुलिस की एंटी व्हीकल थेफ्ट टीम ने बामड़ोली क्षेत्र में बराही मोड़ से एक युवक को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ लाइनपार थाने में केस दर्ज किया गया है। उसे जेल भेज दिया गया है। एवीटी इंचार्ज सज्जन कुमार ने बताया कि उनकी एक टीम बामड़ोली क्षेत्र में नाकाबंदी कर रही थी। इसी दौरान एक संदिग्ध युवक नजर आया। शक के आधार पर पकड़कर तलाशी ली तो उसके पास देशी पिस्तौल बरामद हुई। आरोपी की पहचान टिंकू निवासी बामड़ोली के रूप में हुई है।

हेरोइन सहित एक आरोपी को दबोचा

बहादुरगढ़। पुलिस की एंटी नार्कोटिक सैल ने हेरोइन सहित एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है। एएनसी इंचार्ज जमील अहमद के अनुसार, उनकी टीम को सूचना मिली थी कि बहादुरगढ़ का निवासी लक्ष्य नशीला पदार्थ बेचता है। इस पर टीम झीमरों वाले मोहल्ले में गई। वहां मंदिर के पास से आरोपी को काबू किया। राजपत्रित अधिकारी की मौजूदगी में तलाशी लेने पर उसके पास 3.20 ग्राम हेरोइन बरामद हुई। आरोपी के खिलाफ सिटी थाने में केस दर्ज किया गया है।

सराभा का बलिदान दिवस 16 को

बहादुरगढ़। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान पंजाब में सशस्त्र संग्राम के अगुवा रहे करतार सिंह सराभा व उनके 6 साथी क्रांतिकारियों को अंग्रेज हुकूमत ने 16 नवंबर 1915 को फांसी पर चढ़ा दिया था। शहीद यादगार कमेटी से जुड़े कामरेड जयकरण मांडोठी ने बताया कि करतार सिंह सराभा में ग्राम्य जीवन की एक सहज सरलता के साथ तीक्ष्ण विवेचनात्मक बौद्धिकता भी थी। भगत सिंह भी उन्हें अपना हीरो मानते थे। उन्होंने बताया कि शहीद करतार सिंह सराभा का शहादत दिवस सम्मान के साथ मनाया जाएगा।

चिकित्सकों ने अमर सिंह की गंभीर हालत को देखते हुए पीजीआई रोहतक किया रेफर

महेंद्रगढ़ के झगड़ौली गांव में रिश्तेदार के दाह संस्कार से लौट रहे थे

संतुलन बिगड़ने से पेड़ से टकराई कार दंपति सहित तीन की मौत, तीन घायल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

▶▶ हादसे के बाद राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची तथा एंबुलेंस के माध्यम से शवों को पोस्टमार्टम के लिए तथा घायलों को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल में करवाया भर्ती।

शनिवार दोपहर बाद क्षेत्र के गांव रईया के नजदीक संतुलन बिगड़ने से अनियंत्रित हुई गाड़ी पेड़ से जा टकराई। इस घटना में गाड़ी सवार एक महिला सहित तीन लोगों की मौत हो गई जबकि दो अन्य घायल हो गए। जानकारी के अनुसार दिल्ली के हस्तसाल गांव निवासी एक परिवार के सदस्य गाड़ी में सवार होकर महेंद्रगढ़ के झगड़ौली गांव में किसी रिश्तेदार के दाह संस्कार से लौट रहे थे। इसी दौरान बीच रास्ते जब उनकी गाड़ी रईया गांव के नजदीक पहुंची तो अचानक गाड़ी का संतुलन बिगड़ गया और वह सड़क किनारे पेड़ से जा टकराई। इस घटना में लालचंद पुत्र गिरधारी, निर्मला देवी पत्नी लालचंद व छगन पुत्र बनवारी की मौके पर ही मौत हो गई। इनके अलावा अंकित व उसके पिता अमर सिंह को गंभीर चोटें आई। हादसे के बाद राहगीरों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची तथा एंबुलेंस के माध्यम से शवों को पोस्टमार्टम के लिए तथा घायलों को उपचार के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने अमर सिंह की गंभीर हालत को देखते हुए उसे प्राथमिक उपचार के बाद रोहतक पीजीआई रेफर कर दिया जबकि आंशिक रूप से घायल अंकित भी अपने पिता के साथ रोहतक चला गया।

झज्जर। नागरिक अस्पताल में मामले की जानकारी लेते हुए पुलिसकर्मी। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। शवों को शव गृह में लेकर जाते हुए स्वास्थ्य कर्मी।

चपेट में आई दो वर्षीय मासूम

रईया गांव के नजदीक जब यह हादसा हुआ तो अनियंत्रित हुई गाड़ी से उछले पत्थर की चपेट में एक वर्षीय मासूम भी आ गई। राहगीरों ने बताया कि प्रवासी धर्मपाल गांव के नजदीक स्थित अमरूद के बाग में कार्य करता है तथा सड़क किनारे अमरुद की फड़ लगाता है। उसकी पत्नी पिंकी अपनी करीब एक वर्षीय पुत्री परी को दवा दिलाकर वहां लौटी थी। इसी दौरान कार से उछला एक पत्थर आकर परी को लगा। इस घटना में परी को भी चोट लगी जिसे रोहतक पीजीआई रैफर किया गया है।

गाड़ी काटकर निकाला घायलों को बाहर

पेड़ से टकराने के बाद गाड़ी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। ऐसे में गाड़ी सवार लोगों को निकालने में परेशानी आई। राहगीरों की सहायता से गाड़ी की खिड़की काटकर घायलों व शवों को बाहर निकाला गया। टक्कर लगने से गाड़ी के एयर बैग भी खुल गए थे। एयर बैग खुलने के कारण गाड़ी चालक की जान बच गई।

परिजनों के पहुंचने पर आज कराया जाएगा शवों का पोस्टमार्टम

हादसे की सूचना पर सदर थाना प्रभारी विनोद कुमार अस्पताल पहुंचे। उन्होंने बताया कि रईया गांव के पास उन्हें हादसे की सूचना मिली थी। जिसके बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए शव गृह में रखवाया गया है जबकि हादसे के घायलों को रोहतक पीजीआई रैफर किया गया है। मृतकों के परिजनों को सूचना दे दी गई है। उनके आने पश्चात रविवार को शवों का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। इस संबंध में नियमानुसार आगामी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

केएमपी पर हादसे में कैंटर सवार युवक गंभीर रूप से घायल

बहादुरगढ़। बादली में केएमपी पर खड़े ट्रक से कैंटर टकरा गया। इस हादसे में कैंटर सवार एक युवक को गंभीर चोट आई। उसे पीजीआई रोहतक रेफर किया गया है। उसकी शिकायत पर लिफ्ट देने वाले कैंटर चालक के खिलाफ केस दर्ज हुआ है। घायल की पहचान बागपत के निवासी राहुल के रूप में हुई है। राहुल का कहना है कि वह मानेसर स्थित एक कंपनी में काम करता है। अभी कुछ दिन पहले कुंडली में केएमपी पर सवारी वाहन का इंतजार कर रहा था। उसने एक कैंटर चालक से लिफ्ट ली। जब बादली के पास पहुंचे तो चालक ने सड़क किनारे खड़े एक वाहन में कैंटर की टक्कर मार दी। मैं कैंटर में फंस गया और चालक मेरा मोबाइल लेकर वहां से भाग गया। राहगीरों की मदद से मुझे निकाला गया। मेरे दोनों पांव टूट चुके थे। अस्पताल में लेकर गए तो पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया। आरोपी चालक की लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ। उधर, बादली थाना पुलिस मामले में जांच कर रही है।

जापानी शख्स का शव एंबेसी को सौंपा

बहादुरगढ़। एक हाउसिंग सोसाइटी में स्थित होटल से संदिग्ध परिस्थितियों में गिरकर जान गंवाने वाले शख्स का शनिवार को पुलिस ने नागरिक अस्पताल में पोस्टमार्टम करा दिया। बयान के आधार पर पुलिस ने घटना को संयोग मानकर कार्रवाई की है। दरअसल, जापान का निवासी करीब 53 वर्षीय सामातो यामादा मारुति कंपनी में काम करता था और यहां एक होटल में कुछ दिनों से ठहरा हुआ था। शुक्रवार की सुबह उसका शव होटल से नीचे फर्श पर देखा गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। सामातो यामादा बहुमंजिला होटल से कैसे गिरा, ये तफ्तीश का विषय है। पुलिस ने एंबेसी को मामले की जानकारी दे दी थी। जिसके बाद एंबेसी ने उसके परिजनों को सूचित किया। बताते हैं कि सामातो के परिवार में केवल उसकी बुजुर्ग मां है। वह यहां आने में फिलहाल सक्षम नहीं थी। इसके बाद पुलिस ने शनिवार को पोस्टमार्टम करा एंबेसी से आए लोगों व सहकर्मियों को सौंप दिया।

बीएसएनएल परिसर में चोरी की वारदात

बहादुरगढ़। बीएसएन क्वार्टर परिसर में बने स्टोर में चोरी हो गई। अज्ञात चोर स्टोर से काफी सामान चुरा ले गए। इस संबंध में पुलिस को शिकायत दे दी गई है। सिटी थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी शिकायत में जेटीओ सुनील ने कहा है कि वह यहां बीएसएनएल क्वार्टर में रहते हैं। क्वार्टर के पीछे स्टोर पंप में कुछ सामान रखा हुआ है। शाम सात बजे देखा तो स्टोर में छेड़छाड़ महसूस हुई। इसके बाद जांच की तो मिक्सर ग्राइंडर, चार एलईडी, तीन रूम हीटर, चार हैंड जूसर, पानी का पाइप, पीतल के बर्तन, तीन-चार दीवार घड़ी, क्रिकेट किट, स्टील का मटका आदि सामान गायब था। अपने स्तर पर जांच की लेकिन कुछ पता नहीं चला। फिर पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। सुनील की शिकायत पर सिटी थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। जल्द ही वारदात सुलझाने की बात कही जा रही है।

विधायक ने सांखोल जलघर का किया निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

शनिवार को विधायक राजेश जून ने गांव सांखोल के जलघर का दौरा किया और पेयजल व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान उपस्थित ग्रामीणों ने उन्हें गांव में लंबे समय से चली आ रही दूषित पेयजल की समस्या से अवगत कराया। ग्रामीणों ने बताया कि पेयजल की गुणवत्ता लगातार खराब बनी हुई है, जिस कारण लोगों को स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही उन्होंने एक अतिरिक्त नया स्टोरेज टैंक बनाने की मांग भी रखी। विधायक राजेश जून ने ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि वे संबंधित विभागीय अधिकारियों के साथ बैठक कर दूषित पेयजल समस्या के स्थाई समाधान के लिए तुरंत कार्रवाई करेंगे। नया स्टोरेज वाटर टैंक बनाने के प्रस्ताव पर भी उचित कदम उठाए जाएंगे। इस अवसर पर संजय, मनीष चाहर, महेंद्र नंबरदार, जय चंद्र, दिनेश मेंबर, सतीश कल्सन, जयभगवान, सुनील, अजय, संदीप व प्रेम आदि मौजूद रहे।

बहादुरगढ़। सांखोल के जलघर में विधायक राजेश जून का स्वागत करते ग्रामीण।

बहादुरगढ़। महापुकार रैली को लेकर नगर परिषद कार्यालय में जुटे सफाई कर्मी।

महापुकार रैली को लेकर कर्मियों ने कसी कमर

नगर परिषद बहादुरगढ़ में सफाई कर्मचारियों की बैठक आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

रविवार को कुरुक्षेत्र में होने जा रही महापुकार रैली को लेकर नगर परिषद बहादुरगढ़ में सफाई कर्मचारियों की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता इकाई प्रधान राजेश बालगुहेर ने की, जबकि मंच संचालन सचिव अमित ने किया।

बैठक में जिला प्रधान राजेंद्र तूषामड़ व अन्य पदाधिकारियों ने उपस्थित सफाई कर्मचारियों को संबोधित करते हुए रैली में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह रैली कर्मचारियों की एकता और हक की आवाज को बुलंद करने का प्रतीक बनेगी।

इस अवसर पर कैशियर मुकेश बालगुहेर, वरिष्ठ उप प्रधान लीलाराम, उप प्रधान अजय, उप प्रधान सपना, सह सचिव होशियार सिंह, जिला ऑडिटर संदीप, प्रचार सचिव सरोज, कार्यकारिणी सदस्य उषा, हेड दरोगा वेदपाल, राजकुमार, सतबीर, नंदराम, कुलदीप आदि ने भी अपने विचार रखे। विजय, विनोद, प्रवीण, सुनीता, शकुंतला, मोनिका, नवीन, मोनी, सनी, पिंकी, सुनील, विकास, विक्की, सुशीला आदि ने रैली की सफलता के लिए पूरी निष्ठा से काम करने का संकल्प लिया। सफाई कर्मचारियों ने एकजुट होकर कहा कि वे कुरुक्षेत्र में अपनी उपस्थिति से संगठन की ताकत दिखाएंगे।

विद्यार्थियों की उपलब्धि कड़ी मेहनत और शिक्षकों के समर्पण का परिणामः महिपाल

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास के विद्यार्थियों ने तीन प्रमुख जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

संस्कारम पब्लिक स्कूल खातीवास के विद्यार्थियों ने तीन प्रमुख जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं ओपन युवा महोत्सव, बाल भवन और हरियाणा दिवस समारोह में सबसे अधिक प्रथम स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है। विद्यार्थियों ने इन तीनों प्रतियोगिताओं में शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता में रिकॉर्ड 47 पुरस्कार जीते और दो लाख से अधिक का नकद पुरस्कार हासिल किया। प्रवक्ता ने बताया कि हाल ही में संपन्न हुए जिला स्तरीय ओपन युवा महोत्सव में विद्यार्थियों का प्रदर्शन शानदार रहा। इस महोत्सव में संस्कारम के विद्यार्थियों ने पांच महत्वपूर्ण पुरस्कार अपने नाम किए। जिनमें नृत्य, ग्रुप सॉन्ग, और ऑर्केस्ट्रा में प्रथम स्थान शामिल है।

इसके अलावा, सोलो इंस्टुमेंटल और पेंटिंग विधाओं में भी उन्होंने द्वितीय स्थान हासिल किया। इसके अलावा हरियाणा दिवस समारोह की प्रतियोगिताओं में भी संस्कारम के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा दिखाते हुए तीन पुरस्कार प्राप्त किए। इन प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने ग्रुप डांस कॉम्पिटिशन में प्रथम स्थान, क्ले मॉडलिंग कॉम्पिटिशन में द्वितीय स्थान और पेंटिंग कॉम्पिटिशन में तृतीय स्थान हासिल किया।

वहीं बाल भवन प्रतियोगिताओं में रिकॉर्ड 39 पोजीशन के साथ ओवरऑल ट्रॉफी पर कब्जा किया। संस्कारम ग्रुप के चेयरमैन महिपाल ने बताया कि विद्यार्थियों की ऐतिहासिक सफलता पर अत्यंत गौरवान्वित हैं। रिकॉर्ड 47 पुरस्कारों के साथ दो लाख से अधिक का नकद पुरस्कार जीतना उनकी कड़ी मेहनत और हमारे शिक्षकों के समर्पण का परिणाम है।

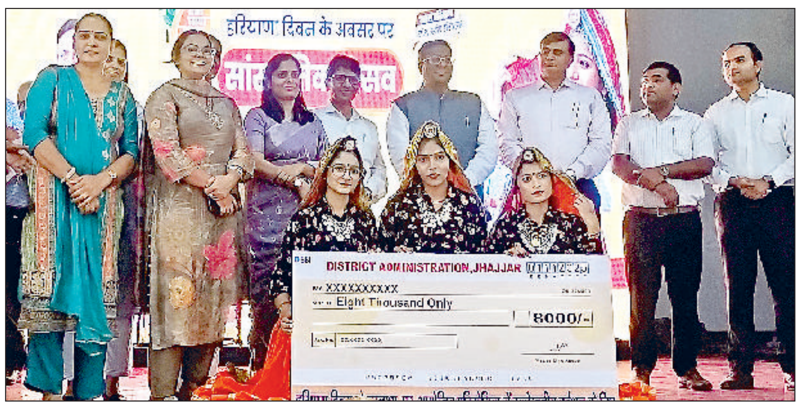

झज्जर। होनहार प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल। (फाईल फोटो)

बहादुरगढ़। जयबीर कौशिक को ज्ञापन देते मंडी के विक्रेता। फोटो : हरिभूमि

मंडी में व्याप्त समस्याओं के समाधान की मांग

बहादुरगढ़। सब्जी मंडी के पंजीकृत फुटकर विक्रेताओं ने अपनी समस्याओं को लेकर इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स काउंसिल हरियाणा के प्रभारी जयबीर कौशिक को ज्ञापन दिया। विक्रेताओं ने अवैध फुटकर बिक्री, बरसाती पानी निकासी और कूड़े के ढेर को हटाने जैसी समस्याओं का जल्द समाधान करवाने की मांग की है। विक्रेताओं ने बताया कि मंडी परिसर में करीब 200 के करीब अवैध फुटकर विक्रेता बैठ गए हैं, जिनके कारण 210 पंजीकृत विक्रेताओं की बिक्री लगभग ठप हो चुकी है। बार-बार शिकायत करने के बावजूद प्रशासन ने कोई ठोस कार्रवाई नहीं की। किसान शेड में केवल किसान को सब्जी बेचने का अधिकार है, फिर भी वहां अवैध बिक्री जारी है। मंडी प्रधान प्रदीप दलाल, जिले सिंह सैनी, प्रकाश, विनोद, डिंपी, नरेश, सुरेंद्र, रमेश, सोनू, मुकेश आदि ने कहा कि बरसाती पानी निकासी के लिए लगाई गई मोटरों का ऑपरेटर समय पर नहीं आता और लापरवाही बरतता है। साथ ही, फुटकर विक्रेता शेड के पास लगे कूड़े के ढेर से पूरे परिसर में गंदगी और दुर्गंध फैलती रहती है। विक्रेताओं ने प्रशासन और संबंधित अधिकारियों से आग्रह किया है कि अवैध विक्रय को तुरंत रोका जाए, निकासी व्यवस्था सुधारने के लिए जिम्मेदार ऑपरेटर नियुक्त किया जाए और कूड़े का ढेर स्थानांतरित किया जाए, ताकि मंडी में स्वच्छता कायम हो।

झज्जर। प्रदर्शन के बाद ज्ञापन सौंपते हुए विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी।

महिला सफाई कर्मचारी के साथ हुई घटना को लेकर कर्मचारियों ने जताया विरोध, सौंपा ज्ञापन

झज्जर। महर्षि दयानंद विश्वद्यालय में महिला सफाई कर्मचारी के साथ किए गए अमानवीय व्यवहार के आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग को लेकर शनिवार को विभिन्न कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने रोष जताते हुए जिला प्रशासन के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा। कामकाजी महिला समन्वय समिति, सीआईटीयू, आशा वर्कर्स यूनियन, चौकीदार सभा, नगर परिषद सफाई कर्मचारी तथा ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के प्रतिनिधि लघु परिसर पहुंचे। यहां उन्होंने सरकार विरोधी नारे लगाते हुए घटना के आरोपियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की मांग उठाई। इस मौके पर संदीप कुमार मारौत, किरण, प्रवेश, चौकीदार सभा के जिला प्रधान राजेंद्र, सर्व कर्मचारी संघ के जिला प्रधान रामबीर, नगर परिषद सफाई कर्मचारी यूनियन के इकाई प्रधान शिवम, क्रैच वर्कर तन्नु, किरण, आशा वर्कर कविता, सुदेश सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

मकान में घुसकर फायरिंग की

बहादुरगढ़। दुर्गा कॉलोनी में मकान में घुसकर जान से मारने की नीयत से हमला करने और फायरिंग करने का मामला सामने आया है। मामला पुरानी रंजिश से जुड़ा हुआ है। लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वारदात दुर्गा कॉलोनी की गली नंबर दो में बीती देर रात को हुई। पुलिस को दी शिकायत में रंजीत ने कहा है कि देर रात को कुछ युवक बेटे विक्रम को मारने की नीयत से हमारे घर में घुस आए। हमलावरों ने तीन बार गोलियां चलाई और धमकी देकर चले गए। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। उधर, सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। फॉरेंसिक टीम बुलाई गई। शिकायत के आधार पर लाइनपार थाना पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। इस हमले में शिकायतकर्ता पक्ष की ओर से संतोष उर्फ राजू व उसके साथियों पर आरोप लगाया है। कुछ और नाम भी मामले में सामने आए हैं। बताते हैं कि पिछले महीने इस कॉलोनी में एक मकान में घुसकर फायरिंग की गई थी। उस केस में आधा दर्जनभर युवाओं की गिरफ्तारी हुई थी। बीती रात को हुई फायरिंग उसी मामले की रंजिश से जुड़ी बताई जा रही है। लाइनपार पुलिस का कहना है कि केस दर्ज कर लिया है। जांच की जा रही है। हमलावरों की तलाश में दबिश दी जा रही हैं। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर वारदत को सुलझाया जाएगा।

फायरिंग कांड में तीन आरोपी गिरफ्तार

बहादुरगढ़। झज्जर पुलिस ने ऑपरेशन ट्रेकडाउन के तहत दुर्गा कॉलोनी में हुई हवाई फायरिंग के मामले में 12 घंटे के भीतर तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से तीन अवैध पिस्तौल और 9 जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। पुलिस कमिश्नर डॉ. राजश्री सिंह ने बताया कि सीआईए बहादुरगढ़ की टीम ने यह कार्रवाई की। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान संतोष उर्फ राजू निवासी दुर्गा कॉलोनी तथा प्रीत और सागर निवासी सैनिक नगर के रूप में हुई है। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि वारदात पुरानी रंजिश के चलते की गई। दोनों पक्षों में दो साल पुरानी रंजिश है। पिछले महीने संतोष उर्फ राजू के घर पर हमला और फायरिंग हुई थी, जिसमें छह लोग गिरफ्तार हुए। अब दूसरे पक्ष के मकान के बाहर बीती रात को गोलियां चलीं, जिसमें राजू व उसके दो साथी काबू किए गए हैं।

एचडी साल्हावास में दो दिवसीय 35वें वार्षिक खेलोत्सव का हुआ शुभारंभ

बीएड कॉलेज के पूर्व छात्र अंकित जाखड़ ने गुब्बारे उड़ाकर ध्वजारोहण ककिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

एचडी साल्हावास में शनिवार को दो दिवसीय 35वां वार्षिक खेलोत्सव एवं एथलेटिक्स मीट का शुभारंभ एचडी बीएड कॉलेज के पूर्व छात्र अंकित जाखड़ ने बतौर मुख्यातिथि गुब्बारे उड़ाकर और ध्वजारोहण करके किया। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त प्राचार्य नित्यानंद जाखड़, हैंडबाल कोच रामभगत जाखड़ और डीपीई जयप्रकाश जाखड़ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

सर्वप्रथम मुख्यातिथि, विशिष्ट अतिथि, प्रबंधन समिति के पदाधिकारी और क्षेत्र के प्रबुद्धजनों शिक्षाविदों की उपस्थिति में विद्यालय का खेल ध्वज फहराया गया और मशाल प्रज्वलित की गई। एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया ने मुख्यातिथि का परिचय देते हुए उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा, शालीनता व अनुशासनप्रियता की सराहना की।

खिलाड़ियों को 4,14,000 की नकद पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया। जिन्होंने राष्ट्रीय, राज्य व जिला स्तर पर मेडल प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया था। इसके अतिरिक्त, नियमित पढ़ाई करते हुए एनडीए क्वालिफाई विद्यार्थियों को 21सौ-21सौ रुपए और गणित प्राध्यापक रोहताश बल्हारा को 11 हजार रुपए देकर सम्मानित किया गया। दसवीं कक्षा में 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को 11 हजार रुपए और 90 प्रतिशत से अधिक अंक वाले छात्रों को 51सौ रुपए की पुरस्कार राशि दी गई। विद्यालय की होनहार छात्रा सुरैना को विद्यालय की सर्वश्रेष्ठ छात्रा घोषित किया गया और 21 सौ रुपए की राशि देकर सम्मानित किया गया।

मुख्यातिथि अंकित जाखड़ ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेलों से शारीरिक व मानसिक विकास होता है और अनुशासन जीवन का सबसे बड़ा गुण है। प्रत्येक विद्यार्थी को किसी न किसी खेल में अवश्य भाग लेना चाहिए।

झज्जर। मुख्यातिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए एचडी ग्रुप निदेशक रमेश गुलिया।

ये रहे विजेता

पहले दिन की खेल प्रतियोगिताओं में लड़कों के वर्ग में 100 मीटर दौड़ में अटल सदन के इशांत ने प्रथम और रमन सदन के कपिल द्वितीय स्थान पर रहे। 800 मीटर दौड़ में पटेल सदन के यश प्रथम और अटल सदन के लोकेश द्वितीय स्थान पर रहे। लड़कियों के वर्ग में 100 मीटर में नंदिता और 400 मीटर में स्नेहा सबसे तेज दौड़ीं। शॉटपुट में देव, लंबी कूद में हिमानी और डिस्कस थ्रो में दक्ष ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पहले दिन के खेल परिणामों में पटेल सदन 85 अंकों के साथ प्रथम, रमन सदन 83 अंकों के साथ द्वितीय और अटल सदन 78 अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रहा।

हम सब जानते हैं कि देश-समाज का भविष्य हमारे नौनिहालों के हाथों में है। इसलिए उनके लालन-पालन से लेकर उनके समग्र विकास पर बहुत ध्यान देने की जरूरत होती है। नए दौर में बच्चों के सामने कैसी चुनौतियां हैं, उन्हें किन स्तरों पर संघर्ष करना पड़ रहा है, इसे हमें समझना होगा। तभी उनका बचपन सुरक्षित होगा और उनके साथ देश-समाज का भविष्य भी बेहतर बन सकेगा।

हमारी सजगता से बच्चों को मिलेगा सुरक्षित बचपन-बेहतर भविष्य

विशेषः बाल दिवस 14 नवंबर

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

हर साल 14 नवंबर को पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर भारत में बाल दिवस मनाया जाता है, जिसका पारंपरिक अर्थ रहा है- बच्चों की मासूमियत और जिज्ञासा को सहेजना। लेकिन यह कहना गलत नहीं होगा कि जब से बाल दिवस शुरू हुआ था, तब से अब तक इसके भावनात्मक अर्थ पूरी तरह से बदल चुके हैं। कभी यह बच्चों को टॉफी देने, उनसे कार्यक्रम करवाने और स्टेज से उन्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाने का दिन हुआ करता था। लेकिन 21वीं सदी के इस 25वें साल में बाल दिवस का मतलब हर बच्चे को डिजिटल, मानसिक और पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित बचपन देना है।

बदल गए बाल दिवस के मायने

आज बच्चों से मुखातिब होने का मतलब उन्हें केवल शिक्षा और पोषण तक सीमित रखना नहीं है बल्कि आज के बच्चों का एक्सपोजर-एआई, सोशल मीडिया, मोबाइल एडिक्शन, जलवायु संकट और करियर को लेकर तरह-तरह के दबावों से घिरा हुआ है। आज बचपन के चारों तरफ नई-नई चुनौतियां हैं, जिन्हें शायद आज के चार दशक पहले के बच्चे जानते तक नहीं थे। इसलिए साल 2025 में बाल दिवस का वही मतलब नहीं है, जो 1970 या 80 में हुआ करता था। आज बाल दिवस का मतलब बच्चों को सुरक्षित, स्वतंत्र और खुशहाल इंसान बनाने का सपना ही नहीं बल्कि उन्हें उचित अवसर देना भी है। इसलिए आज यह दिन बच्चों को याद करने का नहीं, उनकी दुनिया को बेहतर बनाने का दिन है। आज यह दिन हममें उनके भविष्य के निर्माण के प्रति चिंता पैदा करता है। नई सदी की नई चुनौतियों के अनुरूप आज बच्चों के बचपन को संजोने से आगे बढ़कर उन्हें भविष्य के अनुरूप इंसान गढ़ने का दिन है।

कई दबावों से घिरा है बचपन

पंडित नेहरू बच्चों को देश का भविष्य मानते थे। उनका सोचना था कि अगर बच्चों को सही दिशा में सोचने, सवाल करने और सीखने की आजादी मिले तो वे आपकी कल्पना से भी ऊंची उड़ान भर सकते हैं। लेकिन हमने आजादी के बाद के पिछले 80 सालों में बचपन को फलने-फूलने के लिए एक खुला वातावरण देने की बजाय आज के बच्चों को प्रेशर कुकर पीढ़ी बना दिया। आज दस साल का बच्चा भी अपने करियर की उस तरह चिंता करता है, जैसी चिंता आजादी के तुरंत बाद के दिनों में 40 साल के अधेड़ भी नहीं करते थे। उस जमाने में बचपन का मतलब होता था- खेलना, बेफिक्र होकर जीना और जीवन की असफलताओं से गुजरकर सफलता की ओर बढ़ना। लेकिन आज स्थिति एकदम बदल गई है। ऐसा माहौल बन गया है जैसे आज जीवन में असफलता के लिए कोई जगह ही नहीं है। आज की तारीख में दस-बारह साल के बच्चे एक नहीं कई-कई क्षेत्रों में पारंगत बनने के लिए वैसी गंभीर ट्रेनिंग लेते हुए मिल जाएंगे, जैसे कभी वयस्क लिया करते थे।

बच्चों के बीच न पनपे असमानता

डिजिटल युग में बचपन की बाधाएं बिल्कुल अलग हैं। आज 27 करोड़ बच्चे इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। अब किताबों से पहले उनके हाथ में स्मार्ट मोबाइल होते हैं, जबकि दूसरी तरफ बड़ी संख्या में ऐसे भी बच्चे हैं, जिन्हें जीवन की बुनियादी सुविधाएं भी हासिल नहीं हैं। ऐसे में भला देश के सभी बच्चे एक तरह से कैसे आगे बढ़ सकते हैं? यहां स्मार्ट फोन रखने वाले बच्चे ऑनलाइन शिक्षा, कोडिंग, डिजाइन और उद्यमिता के भविष्य का पाठ अपनी स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही पढ़ना शुरू कर देते हैं, वहीं करोड़ों गांवों, कस्बों के बच्चों के लिए ये पाठ उनकी जिंदगी शुरू हो जाने के बाद भी मुश्किल से शुरू हो पाता है। इसलिए जरूरी है कि किसी भी तरह से व्यवस्था करके भारत में बच्चों के बीच असमानता की इस बड़ी खाई को पाटना होगा। आज बड़े पैमाने पर नई पीढ़ी को यह समझाने की जरूरत है कि अब डिजिटल साक्षरता केवल तकनीकी नहीं बल्कि उस मोड़ पर आ गई है, जहां इसे नैतिक शिक्षा का भी हिस्सा बनना चाहिए। बच्चों को आज यह बताना जरूरी है कि डिजिटल माध्यम उनके अच्छे भविष्य को संवारने का साधन मात्र है, साध्य नहीं।

भविष्य के लिए करना होगा तैयार

आज बाल दिवस के मौके पर हम बच्चों को कोई चीज समझाने के लिए रटाने की जिद नहीं कर सकते बल्कि उन्हें समस्या का हल निकालने का मैथड समझाना होगा, साथ ही नैतिक निर्णय लेने की क्षमता भी उनमें भरनी होगी, ताकि वह भविष्य में सिर्फ रोजगार के क्षेत्र में ही सफल न हों बल्कि जीवन जीने के मामले में भी बेहद कामयाब हो सकें। आज बच्चों में पर्यावरणीय चेतना जगाना एक्स्ट्रा एक्टिविटी नहीं, न उनको विशेष बनाना है बल्कि यह जीने की जरूरी गतिविधि का हिस्सा है।

इसी तरह बच्चों में समानता और समावेशिता की सीख देना सिर्फ उन्हें बेहतर इंसान बनाने की कोशिश नहीं है बल्कि उन्हें आज की प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में योग्य बने रहने का जरूरी गुण है और याद रखिए, आज के बच्चों को न तो पूरी तरह से घर की जिम्मेदारी पर छोड़ा जा सकता है और न ही मां-बाप उन्हें बेहतर इंसान और सफल नागरिक बनाने की सारी जिम्मेदारी स्कूलों पर डाल सकते हैं। यह स्कूलों और घरों के साझे अभियान का समय है। अगर हम बच्चों को भविष्य का सफल और शिष्ट नागरिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें आगामी चुनौतियों के लिए तैयार करना होगा। तभी बाल दिवस मनाना भी सफल होगा। *

बच्चों के तनाव को करें दूर

साल 2024 के एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण के मुताबिक आज हर सात में से एक बच्चा किसी न किसी तरह के मानसिक तनाव से गुजर रहा है। मोबाइल युग के पहले ऐसा खतरा दूर-दूर तक नहीं होता था। आज बच्चों के सामने परीक्षा का डर, सोशल मीडिया की चिंता और माता-पिता की उम्मीदों की धुकधुकी उन्हें सहज नहीं होने देती। अगर हम बच्चों को भविष्य का स्वस्थ और सफल इंसान बनाना चाहते हैं, तो हमें उनके स्वास्थ्य को लेकर सहानुभूति से सुनने की सोच बदलनी होगी। स्कूलों में काउंसलिंग सेल, ओपन टॉक सेशन और इमोशनल लिट्रेसी प्रोग्राम लागू करने की बेहद जरूरत आन पड़ी है। आज बाल दिवस बड़ी शिद्दत से हमें याद दिलाता है कि बच्चों में भावनात्मक मजबूती, उनके सफल होने की बुनियादी शर्त है। साथ ही आज बदलते युग की जरूरतों में किसी न किसी कुशलता में दक्ष होना और अपनी गतिविधियों में वैल्यू एडिशन करने की क्षमता पाना भी जरूरी है। यह इसलिए जरूरी है, क्योंकि साल 2030 के बाद मशीनें सिर्फ मशीनें नहीं रहेंगी, वह इंसान से भौतिक प्रतिस्पर्धा करती नजर आएंगी। आने वाले दिनों में परंपरागत नौकरियां बदल जाएंगी। इसलिए आज की पीढ़ी को सीखना ही नहीं बहुत सतर्कता और सावधानी से अपनी क्रिएटिविटी और कोलेब्रेशन की क्षमता को भी साथ-साथ बढ़ाना है।

दायित्व
डॉ.अनिता राठौर

बचपन से किशोरावस्था तक बच्चों के जीवन में सबसे बड़ी भूमिका पैरेंट्स और टीचर्स की होती है। ऐसे में बच्चों के बेहतर, तनावरहित और उज्ज्वल भविष्य के लिए दोनों को उनकी जरूरतों और समस्याओं को गंभीरता से समझना होगा।

पैरेंट्स-टीचर्स जरूर समझें बच्चों की जरूरतें-समस्याएं

हर साल मनाए जाने वाले बाल दिवस का आशय हमें इस बात का एहसास भी कराना है कि कैसे आने वाले समय में बच्चे अपनी कल्पना, मासूमियत और संवेदनशीलता को बरकरार रखते हुए आगे बढ़ सकें? लेकिन सवाल है क्या आज अभिभावक और अध्यापक सचमुच बच्चों के रोजमर्रा की जरूरतों को समझते हैं? क्या तकनीक के बदलाव के इस दौर के बच्चों की जुबान और उनके मन पर तेजी से पड़ रहे प्रभावों को वो समय के अनुरूप समझ पा रहे हैं और इसको ध्यान में रखते हुए उनके विकास की जरूरत की भाषा बोल-समझ पा रहे हैं?

बदलें अपनी मानसिकता: जिस तरह से इंटरनेट, सोशल मीडिया, स्मार्ट क्लास, डिजिटल गेम्स और जूम्स गैदरिंग ने आज की समूची जीवनशैली को बदलकर रख दिया है, उस जीवनशैली को आज की एक दशक पुरानी भाषा से न तो समझा जा सकता है और न ही व्यक्त किया जा सकता है। लेकिन सवाल है, क्या आज भी कई दशक पुराने अध्यापक जो हमारी शिक्षा व्यवस्था की बागडोर अपने हाथों से संभाले हुए हैं, उन्हें डिजिटल युग के इन बच्चों की अभिव्यक्ति की भाषा समझ में आती है? क्या वे उन्हें उनके अनुरूप भाषा में जवाब दे पा रहे हैं? यह सिर्फ अध्यापकों के समक्ष का सवाल नहीं है। सच तो यह है कि यह बात अभिभावकों पर भी पूरी तरह से लागू होती है। आज के बच्चों का बचपन सिर्फ खेल के मैदान में नहीं बल्कि खेल के मैदान में कम, स्क्रीन की रोशनी के बीच ज्यादा बीतता है। लेकिन उनके अधिकांश अभिभावक साथ ही अध्यापक भी आज भी 90 के दशक की उस मानसिकता में अटके हुए हैं, जहां बच्चों से उम्मीद की जाती है कि वे किताबों में डूबे रहें, अपनी क्लास में सबसे ज्यादा नंबर लाएं, बड़ों की बातों को बिना सवाल किए मानें और घर में जब रिश्तेदार आएं तो उनके सामने वे अपने मां-बाप और रिश्तेदारों द्वारा पूछे गए हर सवाल का जवाब गर्दन नीची करके दें।

बदल गई बच्चों की मन:स्थिति: आज के बच्चों की मनःस्थिति बिल्कुल बदल गई है। सच तो यह है कि आज के तेज रफ्तार विकास और चमत्कारिक हो चली तकनीकी के इस युग में उनके मनो-मस्तिष्क में जिज्ञासाओं और आशंकाओं की तेज रफ्तार के अंधड़ चल रहे हैं। फिर भी अभिभावक हों या अध्यापक, उनसे 90 के दशक के बच्चों की तरह ही अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करते हैं। मां-बाप और स्कूल टीचर बच्चों को आज भी पुराने खांचे और सांचे में ढाले रखना चाहते हैं। आज के मां-बाप और अध्यापक इस बात को समझ ही नहीं रहे कि तेजी से आ धमके डिजिटल युग ने किशोरों की समूची मानसिक संरचना को बदल कर रख दिया है। आज 14 से 16 साल के बच्चे न सिर्फ भविष्य के अपने करियर को लेकर चिंतित हैं बल्कि अपने लाइफस्टाइल को लेकर भी उन पर अभी से दबाव है।

आज के बच्चे 'डिजिटल नेटिव्स' हैं यानी, ऐसी पीढ़ी जो तकनीक के साथ पैदा हुई है और समझती है कि उन्हें डांटने और रोकने की इजाजत भी मां-बाप के पास नहीं होनी चाहिए।

समझें नए दौर के बच्चों की जरूरतें: एक बड़ी समस्या यह भी है कि आज अभिभावक अपने बच्चों की ज्यादातर जरूरतों को भौतिक रूप ही समझते हैं। जैसे- उनका स्कूल अच्छा होना चाहिए, उनके पास अच्छी क्वालिटी का मोबाइल होना चाहिए, वो प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर या ट्यूटर से कोचिंग पढ़ें और उनके कपड़े अच्छे से प्रेस (इस्त्री) होने चाहिए। मां-बाप भूल जाते हैं कि बच्चों की इन सब चीजों के अलावा भी जरूरतें हैं। उनकी भावनात्मक और मानसिक जरूरतें। लेकिन यह सिर्फ मां-बाप की ही कहानी नहीं है, आज के अध्यापक भी भूल जाते हैं कि उनके छात्र, उनसे टेक्नोलॉजी में कुशलता के अलावा जीवन की कठिन गांठों को सुलझाने की उम्मीद भी रखते हैं। आज के किशोरों के दिल की बात सुनने वाला कोई नहीं है, न स्कूल में अध्यापक, न घर में मां-बाप।

जी लेने दें बच्चों को बचपन: आज अभिभावकों और अध्यापकों को ठहरकर इन बातों पर गौर करना चाहिए। ऐसे संक्रमण काल में यह जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक दोनों ही बच्चों के दिल की आवाज को गंभीरता से सुनें। आज भी बच्चों को उनकी रुचियों के मुताबिक जीने और बचपने का आनंद लेने की छूट दी जानी चाहिए, जिसके लिए जरूरी है कि अभिभावक और अध्यापक दोनों ही आज के बचपने की भाषा को गंभीरता से समझें, तभी इस सब कुछ की संभावना वाले युग में बच्चों का बचपन शानदार और खुशियों से भरा होगा। *

गजल
प्रताप सोमवंशी

वो सारा दर्द छुप जाता था जो घर-बार के अंदर
वही दिखने लगा है आज-कल अखबार के अंदर

वो घर के एक बूढ़े की तरह सबसे निभाता है
मुसीबत छह दिनों की छुप गई इतवार के अंदर

ये रिश्ते तौलना, गिनना, उठाना, देखना, रखना
ये हम परिवार के अंदर हैं या बाजार के अंदर

वहां रिश्तों की खिड़की पर हैं कितने कीमती पर्दे
घुटन महसूस होती है मुझे दीवार के अंदर

किसी को भी कभी शीशे के जैसे मत समझ लेना
बहुत चुभता है जब टूटा है कुछ किरदार के अंदर

भलाई सिर्फ इतना चाहती है सौंपकर सबकुछ
बदल जाए कहीं दुनिया में कुछ दो-चार के अंदर

बहुत मजबूत होते हैं ये मजबूरी के कांधे भी
जो पूरा गांव ढो कर रख गए बाजार के अंदर

व्यंग्य / विनय मोघे

मोबाइल का बवाल

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो ख्यालीराम के कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए।

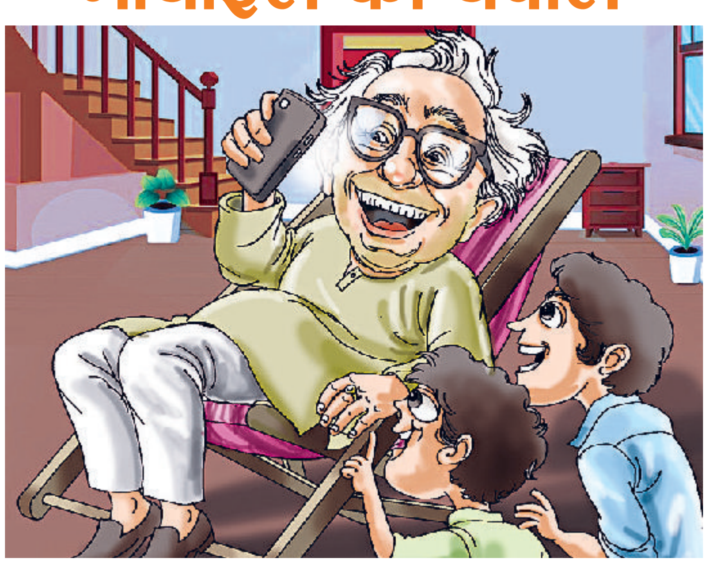

सत्तर वर्षीय ख्यालीराम का परिवार चिंतित है, क्योंकि ख्यालीराम ने अन्न-जल त्याग देने की घोषणा कर दी है। कारण यह है कि घरवालों ने उनका मोबाइल उनसे ले लिया है। अब उनका फेसबुक, व्हाट्सएप सब बंद है। दुनिया से उनका संपर्क टूट गया है, इसीलिए उन्होंने अन्न-जल से अपना, संपर्क तोड़ लेने की ठान ली है।

दरअसल, कुछ महीने पहले ही उनके बेटे ने उनके जन्मदिन पर उन्हें अच्छा वाला स्मार्टफोन दिलाया था। उनके पौत्रों ने उनके मोबाइल पर कई सारे एप्स डाउनलोड कर दिए थे। ख्यालीराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कांपते हाथों और कमजोर नजरों से ख्यालीराम उन एप्स का उपयोग करने लगे। बस यहीं से उनकी और उनके परिवार की परेशानी का सिलसिला शुरू हो गया।

पिछले दिनों जब एक दूर के रिश्तेदार की मृत्यु का समाचार व्हाट्सएप पर आया तो उनके कांपते हाथों ने फूल की जगह तालियों के साथ बहुत बढ़िया प्रकट करने वाला इमोजी भेज दिया। साथ ही में RIP की जगह दो बार PIP-PIP भी लिख दिया। उनकी इस गलती पर ग्रुप के बाकी लोग बहुत नाराज हुए थे। हर बर्थ-डे और एनिवर्सरी पर सेम गलती करते या उनसे कोई और गलती हो जाती है। केक के चित्र की जगह या तो दूध की बोतल वाला चित्र भेज देते या कुत्ते को दी जाने वाली हड्डी का। बधाई संदेशों को खुद टाइप नहीं कर पाते तो कॉपी पेस्ट कर दिया करते। ऐसे में कभी एनिवर्सरी के उनके संदेश में अक्सर पति-पत्नी की जोड़ी बदल जाती थी। पतियों को शायद उनका ऐसा करना अच्छा लगता हो पर पत्नियां नाराज हो उठती थीं। उनकी गलतियों से बचने के लिए उनके दोनों पौत्रों ने उन्हें वॉइस मैसेज भेजने का आइडिया सुझाया। एक बर्थ-डे पर उन्होंने जो वॉइस मैसेज भेजा, जिसमें सिर्फ उनके खांसने की आवाज और दो बार 'हे राम, ये खांसी तो मार ही डालेगी मुझे।' सुनाई दिया। पूरे मैसेज में बर्थ-डे का जिक्र कहीं नहीं हुआ।

फेसबुक पर अपने पुराने मित्रों, सहेलियों को ढूंढने के चक्कर में उनके नाम से मिलते-जुलते नाम वाले कई लोगों को अपना मित्र बना लिया था। कुछ ही दिनों में उनके मित्रों की कुल संख्या सैकड़ा पार कर गई थी, जिनमें असली मित्र बहुत ही कम थे। कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण उनके फेसबुक मित्रों की संख्या में बेतहाशा बढ़ोतरी हो रही थी। एक दिन किसी ऑनलाइन शॉपिंग एप पर उनके कांपते हाथों और कमजोर नजरों के कारण 43 इंच एलईडी टीवी ऑर्डर हो गया, वो भी 'कैश ऑन डिलीवरी।' जिस दिन यह घटना हुई, उसी दिन घरवालों ने उनसे मोबाइल वापस ले लिया। मोबाइल के आदी हो चुके ख्यालीराम अब अन्न-जल के बिना रह सकते हैं पर मोबाइल के बिना नहीं। घरवाले सोच रहे हैं, उन्हें अन्न-जल दें या मोबाइल? *

एआई इमेज

लघुकथा / बालकृष्ण गुप्ता 'गुरु'

बड़ा आदमी

सुभाष के बारह वर्षीय बेटे राहुल ने मचलते हुए कहा, 'पापा, मुझे बड़ा आदमी बनना है।'

'इस सीढ़ी पर चढ़कर बैठ जा।' सुभाष ने दीपावली की सफाई के लिए निकाली गई सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए मजाकिया ढंग से कहा।

राहुल भी हंसी-हंसी में सीढ़ी के तीन डंडों पर चढ़कर ऊपर बैठ गया।

पिता ने पहले अपने और फिर उसके सिर पर हाथ ले जाते हुए बताया, 'देखो, अब तुम मुझसे भी बड़े हो गए। ध्यान दो, तुम एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए बड़े बने हो।'

राहुल ने शिकायती लहजे में कहा, 'ऐसे नहीं, मुझे सचमुच का बड़ा आदमी बनना है।'

'इसके लिए तुम्हें अपने ही आस-पास के किसी बड़े आदमी को ढूंढना होगा, उसके समीप रहना होगा और फिर उसके जैसा बनने की कोशिश भी करनी होगी।'

राहुल ने सवाल किया, 'लेकिन कोई बड़ा आदमी है, मैं कैसे पहचानूंगा?'

'हां, यह समस्या तो है। पहले के समय में पहचान का तरीका अलग था। कोई सज्जन होता था, ज्ञानी होता था, समाज के हित के लिए काम करता था तो उसे बड़ा आदमी माना जाता था। आज के जमाने में किसी व्यक्ति के आस-पास के लोगों को व्यवहार देखकर यह जाना जाता है।' सुभाष ने बताया।

'उस व्यक्ति के बजाय उसके आस-पास के लोगों का व्यवहार देखकर पहचाना जाएगा कि वह कितना बड़ा आदमी है?' राहुल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां!' पिता सुभाष ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'कोई आदमी कहीं पहुंचे तो उसे आता देखकर वहां बैठे सारे लोग खड़े हो जाएं, वह आकर बैठ जाए तो सभी बैठ जाएं, वह आदमी चलने के लिए उठकर खड़ा हो तो शेष लोग भी खड़े हो जाएं, उसे छोड़ने बाहर तक जाएं, तब समझो कि वह बड़ा आदमी है।' *

पुस्तक चर्चा / सरस्वती रमेश

जीने का रास्ता दिखाती कहानियां

समय के साथ बहुत कुछ बदल गया है। इस बदलाव की सबसे बड़ी मार परिवार, रिश्ते, नाते और हमारी संवेदनाओं पर पड़ी है। हर किसी की जिंदगी में हर दिन कुछ ना कुछ टूट रहा है, बिखर रहा है। तकनीक की तरक्की ने दूरियों को और बढ़ाने का काम किया है। इन्हीं दूरियों, बिखराव और भटकाव के बीच जीने का रास्ता तलाशती हैं 'पा की डायरी' की कहानियां। इस पुस्तक की लेखिका आशा शर्मा हैं। लेखिका अपनी इन कहानियों में एक स्वप्न बुनती हैं। स्वप्न जिसमें परिवार का साथ, रिश्तों में नमी व स्त्री की स्वतंत्रता हो। शीर्षक कहानी 'पा की डायरी' दांपत्य प्रेम की अनूठी बानगी है। एक डायरी जो जीवन भर पत्नी को परेशान करती रही। पति के मृत्यु के बाद उसका रहस्य खुलता है, जो पत्नी को हैरान कर देता है। 'दिमाग वाली लड़की' आज की आत्मचेता स्त्री के स्वाभिमान की कहानी है। 'अधबुना स्वेटर' में लेखिका ने रिश्तों की गर्माहट की बड़ी आत्मीय कहानी लिखी है। 'प्रतिरूप', 'पिघलती बर्फ', 'जी ले जरा' आदि कहानियां भी जीवन के उतार-चढ़ाव को खूबसूरती से उकेरती हैं। कह सकते हैं कि ये आज के जटिल समय की कहानियां हैं। मगर लेखिका ने इसे बड़े सरल तरीके से लिखा है। बिल्कुल सुलझे अंदाज में। *

पुस्तक: पा की डायरी (कहानी संग्रह), **लेखिका:** आशा शर्मा, **मूल्य:** 260 रुपए, **प्रकाशक:** समृद्ध पब्लिकेशन, दिल्ली

सेलिब्रेशन / शिखर चंद जैन

अपने भारत देश में तो बाल दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को बाल दिवस मनाता है। लेकिन दुनिया के तमाम देशों में अलग-अलग महीनों/दिनों में बाल दिवस अनोखे अंदाज में मनाया जाता है। इनमें से कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस, जानिए।

दुनिया भर में मनाते हैं बाल दिवस

बच्चों को पूरी दुनिया में प्यार किया जाता है। यही वजह है कि दूसरे दिवस भले ही दुनिया में हर जगह न मनाए जाते हों लेकिन चिल्ड्रेंस-डे दुनिया के लगभग हर देश में मनाया जाता है। दिलचस्प बात यह है कि साल के हर महीने में कहीं ना कहीं चिल्ड्रेन-डे मनाया जाता है। दुनिया भर में 90 से ज्यादा देशों में बच्चों के सम्मान में एक समर्पित राष्ट्रीय अवकाश है। इस अवकाश को बाल दिवस के नाम से जाना जाता है। आइए जानते हैं, दुनिया के कुछ देशों में कैसे मनाते हैं बाल दिवस-

कोडोमो नो हि जापान

जापान में, बाल दिवस हर वर्ष 5 मई को मनाया जाता है। सन 1948 से यह राष्ट्रीय अवकाश है। इसे दो त्योहारों के रूप में मनाया जाता था, टैंगो नो सेक्कु (लड़कों का दिन) और हिनामात्सुरी (लड़कियों का दिन)। जापान में बाल दिवस मनाने का सबसे प्रसिद्ध तरीका काबूतो और गोगात्सु-निंग्यो जैसे पारंपरिक आभूषणों को प्रदर्शित करना होता है। काबूतो एक पारंपरिक समुराई हेलमेट है, जो अकसर सबसे सुंदर सजावट के साथ होता है। गोगात्सु-निंग्यो कवच और जापानी तलवार से सुसज्जित जापानी योद्धा गुड़िया का प्रतीक है। लोग उन्हें घर पर प्रदर्शित करते हैं। 'कोडोमो नो हि' यानी बाल दिवस जापान में एक राष्ट्रीय अवकाश है। कोइनोबोरी नामक रंगीन झंडे उत्सव के विशेष प्रतीक हैं, जिन्हें इस दिन घरों के बाहर खंभों पर लटकाए जाते हैं। जापानी में, कोइ का मतलब कार्प होता है। यह एक प्रकार की मछली है, जो शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है और नोबोरी का मतलब है ऊपर उठना। बाल दिवस के अवसर पर टोक्यो के राष्ट्रीय कासुमीगाओका स्टेडियम में बच्चों का ओलंपिक भी आयोजित किया जाता है, जिसमें हजारों बच्चे और उनके अभिभावक दौड़ में भाग लेते हैं।

डिया डेल निनो मेक्सिको

मेक्सिको में बाल दिवस की शुरुआत सन 1925 में हुई थी। इस उत्सव की शुरुआत अल्वारो ओब्रेगॉन के राष्ट्रपति काल के दौरान हुई थी, जब प्रथम विश्व युद्ध से प्रभावित यहां के कमजोर बच्चों के कल्याण की योजनाएं बनाई जा रही थीं। मेक्सिको में बाल दिवस 30 अप्रैल को मनाया जाता है। इस दिन बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन रेग्युलर क्लास नहीं चलती। सारा दिन खेल खेलने, पिनाटा बनाने और तोड़ने, संगीत का आनंद लेने और बहुत सी मजेदार एक्टिविटीज करने में व्यतीत होता है। स्कूल के बाद, परिवार अपने बच्चों को संग्रहालयों, सिनेमाघरों और चिड़ियाघरों जैसी जगहों पर घुमाने ले जाते हैं, जहां आमतौर पर उस दिन बच्चों के लिए निःशुल्क प्रवेश होता है। कुछ रेडियो और टेलीविजन प्रोग्राम होस्ट करने वाले बच्चों को अपने शो में बुलाते हैं।

यूरिनी नाल, दक्षिण कोरिया

दक्षिण कोरिया में बाल दिवस पर्व को राष्ट्रीय अवकाश होता है। इस दिन आयोजित होने वाले समारोहों में परेड, तमाशा, पार्टियां, पिकनिक और ताइक्वांडो प्रदर्शन शामिल हैं। इस सूची में पर्वतीय पद यात्राएं, नदी किनारे तंबू लगा कर रहने और मौज मस्ती करने जैसी गतिविधियां भी शामिल हैं। इस मौके पर बच्चे पारंपरिक कपड़े पहनते हैं और परिवार के साथ संग्रहालयों, पार्कों में मस्ती करने और फिल्म देखने जाते हैं। कई जगहों पर इस खास दिन के लिए बच्चों को निःशुल्क प्रवेश दिया

जाता है। इस दिन बच्चे दक्षिण कोरियाई शिल्प की वस्तुएं बनाते हैं, जैसे कि हाथ में पकड़ने वाला सोगो ड्रम, कमल का लालटेन या सैम ता, गुक पंखा। इस अवसर पर चावल से बने कोरियाई व्यंजन, पारंपरिक खाद्य पदार्थ जैसे मांडू (मांस और सब्जियों से बना पकौड़ा) कुजुलपैन (पैनकेक के अंदर लपेटे गए मांस और सब्जियों के स्ट्रिप्स), सोलोंगटैंग, चावल के केक जो आधे-चंद्रमा के आकार के होते हैं आदि का लुत्फ भी उठाया जाता है।

लिउयी गुओजी एर्तोंग जिए चीन

चीन में बाल दिवस सन 1949 से मनाया जा रहा

है। यहां इसे हर वर्ष 1 जून को मनाया जाता है। कुछ स्कूलों में, इसे बच्चों को समर्पित विशेष प्रदर्शनों के साथ मनाया जाता है। कई पर्यटक केंद्रों पर इस दिन बच्चों के लिए प्रवेश पर कुछ छूट दी जाती है या पूरी तरह से निःशुल्क प्रवेश दिया जाता है। चीन में इस दिन अधिकतर परिवार अपने बच्चों के साथ समय बिताते हैं और पसंदीदा भोजन बनाते, खाते हैं।

ते रा ओ नगा तामारिकी न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड में बाल दिवस को 'ते रा ओ नगा तामारिकी' के नाम से जाना जाता है और यह हर साल मार्च के पहले रविवार को मनाया जाता है।

इस दिन वहां पूरे देश में मजेदार सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें खेल, कार्निवल की सवारी, भोजन, पारंपरिक हाका नृत्य और बहुत कुछ शामिल होता है। k

अपने देश में मनाते हैं चाचा नेहरू का जन्मदिन

हमारे देश में 14 नवंबर को देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से लोकप्रिय थे। इससे पहले सन 1964 तक बाल दिवस 20 नवंबर को मनाया जाता था। दरअसल, सन 1954 में संयुक्त राष्ट्र ने 20 नवंबर को बाल दिवस के तौर पर मनाने का ऐलान किया था, जिसके चलते हर साल 20 नवंबर को ही बाल दिवस मनाया जाता था। लेकिन 1964 में जवाहर लाल नेहरू के निधन के बाद बाल दिवस भारत में 14 नवंबर को मनाया जाने लगा। इस दिन बच्चों के लिए सभी स्कूलों में मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उन्हें तरह-तरह के खेल खिलाए जाते हैं और गिफ्ट भी दिए जाते हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में कई जगह राज्य सरकारें भी अपने स्तर पर बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित करती हैं।

बिहार के सोनपुर में सदियों से लगने वाले पशु मेले की वैश्विक ख्याति और इसका आकर्षण बरकरार है। आज से शुरू हो रहा यह मेला 10 दिसंबर तक चलेगा। इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

बरकरार है सोनपुर मेले का आकर्षण

सांस्कृतिक उत्सव
धीरज बसाक

आज का दौर इंटरनेट, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, डिजिटल पेमेंट और ई-कॉमर्स का है। यहां तक कि लोग अब पालतू पशुओं की खरीदारी के लिए भी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे समय में भी बिहार का सोनपुर पशु मेला सदियों से न सिर्फ आज भी लग रहा है बल्कि उसका पहले की तरह आकर्षण भी बरकरार है, जो इस मेले की आर्थिक और सांस्कृतिक महत्ता को खुद ही बखान कर रहा है।

लोकजीवन की जड़ों से जुड़ा मेला: सोनपुर का पशु मेला न केवल पशुओं की खरीद-फरोख्त की दृष्टि से एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है बल्कि यह धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकी दृष्टि से भी विशिष्ट आयोजन है, जिसकी चमक सदियों से बरकरार है। इस मेले में पशुओं का व्यापार तो

होता ही है, अपितु यह भक्ति, संस्कृति और लोक परंपराओं का भी महाकुंभ है। यह मेला बिहार ही नहीं, पूरे भारत की ग्रामीण आत्मा और उसकी जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करता है।

सदियों से लग रहा मेला: सोनपुर के पशु मेले का इतिहास 2,000 साल पुराना है। माना जाता है कि कृषि एवं अन्य कार्यों के लिए उपयोगी पशुओं की खरीद-बिक्री यहां मौर्य काल से होती आ रही है। गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर में लगने वाला यह मेला अपने पीछे कई पौराणिक आख्यानों की थाती समेटे हुए है, तो ग्रामीण जीवन की परंपरा का सबसे विश्वसनीय स्रोत भी है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार: सोनपुर का पशु मेला भारत की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक बड़ा केंद्र है। इस मेले में गाय, भैंस, बैल, घोड़े, ऊंट और हाथी बिकते हैं। कभी यह एशिया का सबसे बड़ा हाथी बाजार हुआ करता था। हालांकि आज यह हाथी बाजार बहुत छोटा और विरासत के रूप में ही मौजूद है। यह मेला स्थानीय किसानों और पशु पालकों के लिए कमाई का एक बड़ा अवसर होता है। हाल के सालों में बिहार सरकार ने इसे 'एग्रीकल्चर एंड लाइवस्टॉक केयर' के रूप में विकसित किया है।

परंपरा का डिजिटलीकरण: सोनपुर पशु मेला अब भौतिक रूप में तो लगता ही है, इसका एक बड़ा और व्यापक डिजिटल संस्करण भी मौजूद है। बिहार पर्यटन विभाग की वेबसाइट, सोशल मीडिया एकाउंट और ऑनलाइन बुकिंग सुविधाओं के जरिए देशभर के लोग इस मेले से न केवल डिजिटल दुनिया में रू-ब-रू होते हैं बल्कि वो डिजिटल तरीके से खरीद-फरोख्त भी करते हैं। एक तरह से यह डिजिटल और पारंपरिक लोकजीवन का संगम बन गया है।

लोक-संस्कृति की झलक: इस मेले में देश-विदेश के लाखों पर्यटक, किसान और व्यापारी सिर्फ घूमने, खरीदने-बेचने के लिए ही नहीं आते, बल्कि इस मेले की सांस्कृतिक आत्मा को जीने के लिए भी आते हैं। इस सदियों पुराने पशु मेले में आज भी हर तरफ लोक-नृत्यों, लोकगीतों, नुक्कड़ नाटकों, हस्तशिल्प और लोकभोजनों का खुशबू भरा आकर्षण मौजूद होता है। वास्तव में इस मेले में आकर हम एक ऐसे ग्रामीण भारत से रू-ब-रू होते हैं, जिसकी चमक और खनक आज भी पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित करती है। विदेशी पर्यटकों के लिए तो यह पशु मेला भारत की ग्रामीण संस्कृति का 'ओपन एयर म्यूजियम' की तरह है। बिहार सरकार सोनपुर मेले को हेरिटेज टूरिस्ट प्लेस के रूप में भी प्रमोट करती है, जिससे स्थानीय लोगों की आय में इजाफा होता है और वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है।

सामाजिक-सांस्कृतिक जुड़ाव का अवसर: सोनपुर का मेला सिर्फ व्यापार मेला नहीं बल्कि विभिन्न समुदायों के मिलने-जुलने,

रिश्ते बनाने और अनुभव साझा करने का मंच भी है। इसलिए ग्रामीण समाज में यह मेला सामाजिक बंधन और लोकसंवाद की परंपरा को भी प्रोत्साहित करता है। आज जब पूरी दुनिया में वर्चुअल आयोजनों की भरमार है, ऐसे समय में सोनपुर का यह लोक मेला वास्तविक सामाजिक जुड़ाव का अनुभव देता है। यहां किसान, व्यापारी, शिल्पकार, संगीतकार और लोक-कलाकार सब मिलकर आम नागरिक जीवन की सतरंगी तस्वीर पेश करते हैं। यही वजह है कि आज के इस डिजिटल युग में भी सदियों से आयोजित हो रहे सोनपुर के पशु मेले का आकर्षण जरा भी कम नहीं हुआ है। k

गाइडेंस
कीर्तिशेखर

किसी एक उम्र तक ही सीरियस होकर सफल करियर नहीं बनाया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हर एज की जरूरत के अनुसार करियर को सही दिशा दी जाए।

सक्सेसफुल करियर के लिए हर एज में सीरियस होना जरूरी

जीवन में कामयाब करियर हासिल करने के लिए सही समय क्या होता है, जब हमें इसके लिए गंभीर हो जाना चाहिए? इसके अलग-अलग जवाब हो सकते हैं। अगर हमें जीवन में अपने कामयाब करियर के लिए सजग रहना है तो जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों में अलग-अलग तरह की सजगता बहुत जरूरी है ताकि उनके साझे नतीजे में हमारा शानदार-कामयाब करियर बने।

स्कूल टाइम (10 से 16 साल): यह वह उम्र होती है, जब कोई भी छात्र अपनी पढ़ाई, पढ़े जाने वाले विषय और उन विषयों में अपनी रुझान पहचानना शुरू करता है। इस उम्र में भविष्य के कामयाब करियर के लिए सजग हो जाना जरूरी है। क्योंकि उसी के मुताबिक आपको आगे अपने पढ़े जाने वाले विषयों की स्ट्रीम (आर्ट, कॉमर्स, साइंस) तय करना होता है और जिसमें बेहतर रुझान होता है, उसी दिशा में आगे करियर विकल्प पर फोकस करना होता है। इसलिए इस उम्र में जरूरी है- पढ़ने की आदत और अनुशासन विकसित करना। आप अपनी स्ट्रीम के मुताबिक अपनी रुचि को पहचानिए और उसे उस समय के हिसाब से विकसित करने की कोशिश करें। क्योंकि उम्र का यही वह पड़ाव होता है, जब हमारे जीवन के कामयाब करियर की नींव पड़ती है।

कॉलेज/स्नातक (16 से 23 साल): करियर के लिए हमारी जिंदगी में असली और सर्वाधिक सीरियस होने का यही समय होता है, क्योंकि इसी

समय हमें डिग्री मिलती है और डिग्री के साथ-साथ हम स्किल डेवलपमेंट, इंटर्नशिप या अपने ड्रीम करियर के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। इस समय करियर को लेकर सर्वाधिक गंभीरता की इसलिए भी जरूरत पड़ती है, क्योंकि इस उम्र में हममें सबसे ज्यादा ऊर्जा होती है। इसी उम्र में हमारे पास असफल होकर दोबारा से नए सिरे से करियर शुरू करने का हौसला रहता है।

युवावस्था (23 से 30 साल): यह करियर शुरू हो जाने के बाद उसे स्थिरता प्रदान करने का समय होता है। क्योंकि अब वास्तव में करियर शुरू हो चुका होता है और उसे मजबूत और स्थिर बनाना हमारे हाथ में होता है। इसलिए इस उम्र में हमें

ज्यादा से ज्यादा अपने करियर के इस मोड़ पर फोकस करना चाहिए। उम्र के इस पड़ाव पर हमें सिर्फ करियर के लिए पढ़ाई पर ही ध्यान नहीं देना होता बल्कि नेटवर्किंग, अनुभव और सही अवसर पकड़ने की कोशिश पर होता है। क्योंकि अगर 23 से 30 के बीच हमारे करियर की दिशा अच्छी तरह से तय हो गई, तय होने के साथ-साथ इस दिशा में अगर हमने अपने आपको मजबूती से जमा लिया, तो आगे विकास और पदोन्नति आसान हो जाती है। यही वह उम्र है, जब हम एक करियर में रहते हुए इनकी मजबूती से तैयारी करते हैं। इसी उम्र में स्टार्टअप शुरू करना, अपने विषय विशेष पर रिसर्च करना या जॉब के साथ फ्रीलांसिंग के

अवसर पकड़ना होता है। इसलिए उम्र का यह पड़ाव भी करियर के लिहाज से इंपॉर्टेंट होता है।

स्थिरता-विकास (31 से 40 साल): 31वें साल से लेकर 40वें साल तक हम अपने करियर को स्थिरता प्रदान करते हुए उच्च विकास की ओर आगे बढ़ते हैं। इस दौरान कई बार हमें पीएचडी की पढ़ाई करनी होती है। जॉब में लीडरशिप पाने के लिए मैनेजमेंट कोर्स या इंटरनेशनल सर्टिफिकेशन की पढ़ाई करनी होती है। कुल मिलाकर इस उम्र में हम अपने करियर को मजबूती देकर विशेषज्ञता की ओर बढ़ते हैं और नेतृत्व हासिल करते हैं। इसलिए करियर के लिहाज से उम्र का यह पड़ाव हमारे लिए महत्वपूर्ण होता है कि इस समय तक हमारे क्षेत्र विशेष में हमारी प्रोफेशनल पहचान बनने लगती है और हममें अपने क्षेत्र में स्थिरता हासिल करना जरूरी हो जाता है।

अनुभव का पूंजीकरण (40 साल के बाद): उम्र के इस पड़ाव में हमें अपनी अब तक की मेहनत के कई सुफल मिलते है। लेकिन कई बार हमें इस उम्र में अपना टेक्नोलॉजी स्किल बदलने नए सिरे से अपनी पढ़ाई में कुछ और जोड़ना होता है। इसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। k

सिने ट्रेंड / डी. जे. नंदन

जरूरी नहीं कि जिस फिल्म का बजट ज्यादा होगा, उसका बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी जानदार होगा। कई बार लो बजट में बनी फिल्में भी कमाई के मामले में कमाल कर जाती हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बनी कुछ ऐसी फिल्मों पर एक नजर।

बजट रहा लो-किया हाई कलेक्शन

इस साल भारतीय सिनेमा में बड़े बजट की फिल्मों ने ही नहीं बल्कि छोटे बजट की अच्छी कहानियों पर बनी फिल्मों ने भी कमाल कर दिखाया। कम बजट में बनने वाली कई फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई तो की ही, फिल्म की कहानी और संगीत ने भी लोगों के दिलों को छुआ। मतलब साफ है, अब दर्शक ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसकी कहानी उनके दिल को छू जाए और उन्हें एकबारगी सोचने पर मजबूर कर दे।

कम बजट में बड़ी सफलता: इस साल महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, फिल्म 'सैयारा' 500 करोड़ रुपए से अधिक का बिजनेस चुकी है। इस फिल्म की सफलता ने यह साबित कर दिया है कि दर्शकों को बड़े-भव्य सेट्स और महंगे लोकेशन वाली फिल्में ही नहीं, अच्छी कहानी और अच्छे संगीत पर आधारित फिल्में भी खूब पसंद आती हैं। न्यू कमर्स अहान पांडे और अनीता पड्डा को इस फिल्म ने रातों-रात स्टार बना दिया। 'सैयारा' से पहले विकी कौशल की फिल्म 'छावा' ने वर्ल्डवाइड लगभग 808 करोड़ रुपए की कमाई की थी। महज 90 करोड़ रुपए के बजट में बनी 'छावा' साल 2025 की सबसे अधिक कमाई करने वाली हिंदी फिल्म बनी।

आमिर खान की 'सितारे जमीं पर' ने भी बेहतर प्रदर्शन किया है, जिसने लगभग 300 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। राजकुमार राव अभिनीत 'भूलचूक माफ' महज 45 करोड़ रुपए के बजट से बनी, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने 90 करोड़ रुपए से भी ज्यादा की कमाई की थी।

बड़े बजट के बावजूद नहीं मिली सफलता: इस साल बड़े बजट की कई फिल्मों को लेकर कयास लगाए जा रहे थे कि वो बॉक्स ऑफिस पर बड़ी हिट साबित होंगी। लेकिन इन बिग बजट फिल्मों ने निराश ही किया। अक्षय कुमार की 'स्काई फोर्स' खास कमाई नहीं

'सैयारा' को मिली शानदार सफलता

कर पाई। सनी देओल की 'जाट' उम्मीद से काफी कम चली। सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' भी कुछ खास कमाल नहीं कर पाई। शाहिद कपूर की फिल्म 'देवा', जो की मलयालम फिल्म की रीमेक है, नहीं चल पाई। कंगना रानोट की 'इमरजेंसी' से भी सफलता दूर ही रही। मल्टी स्टारर फिल्म 'हाउस फुल-5' अपना बजट निकालने में तो कामयाब रही, लेकिन फिल्म उम्मीद के मुताबिक मुनाफा नहीं कमा पाई।

'हाउसफुल 5' का उम्मीद से कम रहा कलेक्शन

अन्य भारतीय भाषाओं की सफल फिल्में: हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों पर नजर डालें तो क्षेत्रीय भाषाओं में बनी कई लो बजट फिल्मों ने कमाल की सफलता पाई। तमिल फिल्मों की बात करें तो सिर्फ 7 करोड़ रुपए के मामूली बजट में बनी तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने दुनियाभर में 100 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की है। यह फिल्म पांच सप्ताह तक लगातार बॉक्स

साल की सबसे सफल फिल्मों में शामिल 'छावा'

ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखने में कामयाब रही। बजट और कलेक्शन के अनुपात और व्यूअरशिप को देखते हुए इसे साल 2025 की सबसे सफल तमिल फिल्म कहा जा सकता है।

तमिल भाषा में ही 35 करोड़ रुपए के बजट से बनी 'ड्रैगन' ने 150 करोड़ रुपए से अधिक की कमाई की। 'माधा गज राजा' फिल्म सिर्फ 15 करोड़ रुपए में बनी और इसने 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही तमिल फिल्म 'मामन' का बजट 10 करोड़ रुपए था और फिल्म ने 55 करोड़ रुपए की कमाई की।

मलयालम में बनी फिल्म 'थुडारम' ने बॉक्स आफिस पर बेहतरीन प्रदर्शन किया। लगभग 50 करोड़ रुपए के बजट वाली इस फिल्म ने 235 करोड़ रुपए के आस-पास कमाई की। मलयालम भाषा की ही फिल्म 'रेखा चित्रम' सिर्फ 10 करोड़ रुपए के बजट से बनी थी। फिल्म ने उम्मीद से ज्यादा लगभग 60 करोड़ रुपए की कमाई की। ऐसे ही 'अलप्पाबुझा जिमखाना' 12 करोड़ रुपए के

तमिल फिल्म 'टूरिस्ट फैमिली' ने किया कमाल

बजट से बनी और लगभग 70 करोड़ रुपए की कमाई की।

तेलुगू भाषा की फिल्म 'संक्रांतिकी वस्थुनम' 50 करोड़ रुपए के बजट से बनी और फिल्म ने लगभग 260 करोड़ रुपए की कमाई की।

दर्शकों को प्रभावित करती है कहानी: छोटे बजट की इन भारतीय फिल्मों के बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन यह संकेत करता है कि फिल्म का बजट और स्टारकास्ट भले ही मायने रखते हैं, लेकिन फिल्म की कहानी और उसकी प्रस्तुति भी दर्शकों को खींचने और उन्हें बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। बड़े बजट की फिल्मों का कम चलना और लो बजट फिल्मों का शानदार प्रदर्शन निर्माता-निर्देशकों के लिए भी सबक है कि वे स्टार पावर के अलावा कहानियों और उसके प्रस्तुतिकरण पर भी ध्यान दें। भले ही कम बजट में फिल्में बनाएं, लेकिन अच्छी फिल्में बनाएं। k

'सितारे जमीन पर' ने भी की बढ़िया कमाई